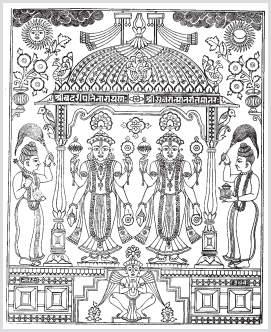

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ अंक : ६७ नवम्बर-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	भक्तरुप में वस्त्रालंकार	०४
०४.	महिमा तथा समझ	०५
०५.	प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी न्युजीलेन्ड)	०७
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	०९
०७.	सत्संग बालवाटिका	११
०८.	भक्ति सुधा	१४
०९.	सत्संग समाचार	१८

॥ अस्मदीयम् ॥

समस्त सत्संग को विक्रम सं. २०६९ से प्रारंभ होने वाले नूतन वर्ष के उपलक्ष्य में श्रीहरि स्मृति के साथ जयश्री स्वामिनारायण। इस समय समग्र गुजरात में निर्वाचन का माहौल बना हुआ है। प्रत्येक राजकीय पक्ष एड़ी से चोटी तटी तक जोर लगा रहा है। जबकि प्रत्येक आदमी भी राजकारणियों को पहचानने लगा है।

हम सभी का कर्तव्य है.... मतदान करना। यदि सभी लोग मतदान करें तो निश्चित ही कोई अच्छा प्रतिनिधिलोगो के कल्याण हेतु चयनित हो सकता है। भ्रष्टाचार की खांई चारो ओर फैली हुई है। सच्चा व्यक्ति पहचानना कठिन हो गया है। यह वात तो जिन्हे राजकारण में तथा लोक व्यवहार में रस हो उन्हीं के लिये है। लेकिन हम सभी का एकमात्र कर्तव्य सुखपूर्वक भजन के लिये है। आनंदानंद स्वामी के ग्रंथ में (पुर २७ तरंग ९८) बड़ी सुन्दर वात लिखी है।

संत, वर्णी, हरिभक्त तथा धर्मवंशी कभी धर्म की रीति का लोप नहीं करते। यही सत्संग है, इसी को सत्संग की सभा कहते हैं। जो सभा एकान्त में छुपके की जाती है वह उत्पातक कही जाती है। ऐसी वात करने वाला चाहे जैसा हो चाहे जितना भी धर्मका पालन करता हो उसे सत्संग में कुसंगी ही कहेंगे। ऐसी छुपी वात करने वाला अन्त में विमुख कहा जाता है। यह वात समझने लायक है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूम्बर-२०१२)

१. प.भ. दीपकभाई नगीनभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा,

७. हलवद गाँव में ब्रह्मभोज के अवसर पर पदार्पण।

१४-१५. मांडवी - कच्छ पदार्पण।

२१-२२. सुखपर (कच्छ) तथा वेकरा (कच्छ) पदार्पण।

२४. ४० वां प्रागट्योत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में संत हरिभक्तों ने धूनधाम से मनाया।

२४ से ६ नवम्बर तक आस्ट्रेलिया के धर्मप्रवास में पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट : **www.narayanghat.com**
वडनगर : **www.vadnagar.com**

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

भक्तरुप में वस्त्रालंकार

साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

आत्यंतिक मुक्ति के श्रेष्ठ उपायो में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के दिव्य स्वरुप तक पहुंचने के लिये तथा दिव्य अलौकिक सुख को प्राप्त करने के लिये श्रीजी महाराजने अपने आश्रितों के लिये खुब उत्तम - सरल परंपरा प्रदान की है । उसमें भगवान के जो वस्त्रालंकार हैं उन्हे धूप-दीप इत्यादि करने से भी शास्वत सुख की प्राप्ति होती है।

विविधप्रकारकी सेवा विधिमें प्रतिदिन भगवान की मूर्ति को वस्त्र-अलंकार धूप-दीप नैवेद्य इत्यादि अर्पण किया जाता है । अर्पण की गयी वस्तु को प्रभु स्वीकार करके उस अर्पित वस्तु के माध्यम से श्रीहरि अर्पण करने वाले व्यक्ति के भक्ति से वशीभूत होकर उसे अपने स्वरुप में स्थान देते हैं। वस्त्र तथा अलंकार जैसी वस्तु के माध्यम से भगवान उस व्यक्ति को आत्यन्तिक मुक्ति प्रदान करते हैं । इसीलिये श्रीहरिने कहा है कि उपासना करने के लिये ही मंदिर का निर्माण कराया हूँ। आगे उसी उद्देस्य से होता भी रहेगा । भगवान को प्राप्त करने का एकमात्र साधन मंदिर में विराजमान मूर्तियां हैं। जो व्यक्ति इन मूर्तियों की उपासना करेगा अथवा वस्त्र-अलंकार अर्पण करेगा उस को श्रीहरि अपने स्वरुप में स्थान देगें हैं। ऐसा उनका वचन है। प्रारब्धके अनुसार वह व्यक्ति अपने पुण्यकाल को भोगता है अंत में वस्त्र-अलंकार के रुप में अक्षरधाम का सुख प्राप्त करता है। अपने संप्रदाय में शिखरी या हरि मंदिर में विराजमान भगवान के भी विग्रह को ऋतु के अनुसार वस्त्र-अलंकार - नैवेद्य अर्पण किया जाता है। उस सेवा का रहस्य यह है कि जिस भाव के साथ भक्त भगवान को वस्त्रालंकार अर्पण करता है उसी भाव के अनुसार भगवान के पास मैं मुकुट के रुप में रहता हूँ। श्रीहरि मुझे मुकुट के रुप में स्थान दिये हैं। कुंडल के रुप में स्थान दिये हैं। नाना विधजितने पात्र है या अलंकार हैं कुंडल-मुकुट इत्यादि रुप में स्थान देकर सेवा करने का अवसर प्रदान किये हैं । हमारे भाग्य की कोई सीमा नहीं है । भगवान अपने सेवा का मुझे सुख प्रदान किये हैं। ऐसा विचार करके हृदय में आनंद समाता नहीं है। ऐसा जो सोचता है वह परम पद का अधिकारी होता है। अर्पण करने के समय अहंकार का भाव नहीं आने देना चाहिये। अपनी भाग्य ही समझनी चाहिये । पुष्टिमार्ग के वैष्णवराज वल्लभाचार्यजीने उत्तम सेवा रीति का मार्गदर्शन किया। भगवान को जो वस्त्रालंकार अर्पण किया जाता है उसकी पहले पूजा की जाती है। बाद में उसे भगवान को अर्पण किया जाता है। आज भी जो उत्तम प्रकार के मंदिर है जैसे बद्रिनारायण श्रीनाथजी इत्यादि मंदिरो में आरती के पहले जो वस्त्रालंकार अर्पण किया जाता है उसकी पूर्व पूजा की जाती है। इसी तरह उन वस्त्रालंकारो को बड़ी मर्यादा के साथ सुरक्षित रखा जाता है। उन पदार्थो को भगवान की तरह मुक्तरुप माना जाता है। वैष्णवों की हवेली में ठाकुरजी नित्य नूतन वस्त्रालंकार धारण करते हैं । श्रीहरिने वचनामृत गढडा प्रकरण ७१ में अमृतवचन कहा है। भगवान में जिसकी आस्था हो, भगवान का जो भक्त हो उसी के हाथ की पूजा भगवान स्वीकार करते हैं। ऐसे भक्त के घर में ही वे निवास करते हैं चाहे वह गारा-माटी का या घास फूस का क्यों न बना हो । उसी भक्त के हाथ का धूप-दीप नैवेद्य, अन्न, वस्त्रादिक को स्वीकार करते हैं। जो भक्त श्रध्धा से प्रीति पूर्वक अर्पण करता है उसे ही स्वीकार करते हैं, अन्य का नहीं जो भी वस्तु भक्त भगवान को अर्पण करता है उसे भगवान अपने धाम में दिव्यरुप बना देते हैं।

भगवान की पूजा में अथवा उन्हें अर्पण किये जाने वाले पदार्थ के समय गद्‌गद् भाव हो जाय तो सच्ची

पेज नं. ६ पर

महिमा तथा समझ

- साधु देवस्वरुपदासजी (जयपुर)

भक्त की मूलभूत भावना परमेश्वर तरफ की होती है। उसके मन में एक भाव आता है कि श्रीहरि को हम किस तरह प्राप्त करें। इस मूलभूत सिद्धांत का समादर पूरा सत्संग करता है। स्वामिनारायण भगवान अपने भक्तों की मनोभिलाषा पूर्ण करने के लिये अक्षरधाम से पधारे थे।

''अक्षरनिवासी वालो आव्या अवनी पर,
अवनी पर आवी वाले सत्संग स्थाप्यो ॥

श्रीमद् भगवत गीता में धर्म की ग्लानि पर अवतार की जो वातहै, वह निमित्त मात्र है। अन्तर्ध्यान के बाद भगवान स्वामिनारायणने भक्तों को जोडने के लिये एक सेतु निर्माण किया - जिस में देव, आचार्य, संत, शास्त्र, हरिभक्त इन पांच समुदाय को मिलाकर सत्संग का सेतु तैयार किया था। इस पांच अंग के माध्यम से एक विशुद्ध परंपरा कायम किये। यह परंपरा यावच्चंद्र दिवाकरौ चलती रहेगी। भगवान की परम्परा का समन्वय बना रहे इसके लिये सभी को समान भाव से प्रयत्न शील रहना पड़ेगा। इससे प्रभु प्रसन्न रहेंगे और सभीका जीवन सुखी होगा। अन्यत्र प्रयाश करने की अपेक्षा मूलभूत सिद्धान्तो में ध्यान देना चाहिये इसी में इहलौकिक तथा पारलौकिक सुख है। सत्संग की महिमा जो नहीं समझा वह व्यर्थ का इधर उधर भटकने जैसा है। सत्संग करना ही सत्संग की शोभा है। हमें तो मात्र श्रीजी महाराज को प्रसन्न करना है। यह भाव जीवन में रहेगा तो निश्चित ही कल्याण होगा भगवान स्वामिनारायणने वचनामृत में महिमा तथा समझ इन दो शब्दों पर खूब बल दिया है। महाराज के इन दोनों शब्दों को जो जीवन में उतार ले तो उसका जीवन सार्थक कहलायेगा। अपने हृदय में सदा यह सोचना चाहिये कि सत्संग दिखाने के लिये करते है या यथार्थरुप से करते हैं। सावधान होकर सत्संग करेंगे तो जीवन में सदा आनंद ही आनंद रहेगा। प्रभुमय बनकर अपना आगे जीवन जीयेंगे तो सत्संग की चरितार्थता होगी।

श्रीजी महाराज एकवार लोया गाँव में सुराखाचर के दरबारगढ में संत हरिभक्तों के साथ सभा में विराजमान थे। सभा के बाहर झालावाड़ देश के अतिवृद्ध ब्राह्मण भक्तिभाव से आकर खड़ा था। उसकी शरीर में कंपन की बिमारी होने से पूरी शरीर कांप रही थी। लेकिन धैर्य पूर्वक खड़ा था। ब्राह्मण मस्तक पर पगड़ी बांधे था। शरीर के वस्त्र इतने फटे थे कि अनेकों बन्धन लगा हुआ था। लेकिन उसका जीवन बन्धन विनिर्मुक्त था। वह महाराज को कुछ भेंट करना चाहता था। एक रुपया उसके पास था वह फटे वस्त्र में बांधरखा था। उस रुपये को खोजने लगा। मिल नहीं रहा था। वह अपनी इस बन्धन करने वाली वस्तु को महाराज के चरण में भेंट करना चाहता था। लोग अपनी वस्तु छिपाते हैं। लेकिन ब्राह्मण उसे ही देने आया है। महाराज इस दृश्य को देख रहे थे। बाद में उस ब्राह्मण के हाथ में पैसा आया अब आनंद की सीमा न रही, तुरंत महाराज के पास भेंट देने चला लेकिन सभा में इतनी भीड थी कि जाना कठिन था। इस से महाराज ब्राह्मण के भाव को समझ गये और सभी से कहे कि रास्ता दीजिये देखिये वे ब्राह्मण देवता भीतर आना चाहते हैं। मार्ग मिलते ही ब्राह्मण महाराज के पास पहुंचा और महाराज स्वयं हाथ आगे बढाकर भेंट स्वीकार किये। १ रुपये की भेटं देकर ब्राह्मण देवता चरण पर गिर गये।

प्रभु एक रुपये का मूल्य समझते थे। महाराज बोले ब्राह्मण देवता ! यह रुपया कहाँ से ले आये ? महाराज मैं अपने पुरुषार्थ से एक रुपया पाया था। घर में दूसरा कुछ नहीं है जो आपको दूं बस, यही एक रुपया था जिसे आप स्वीकार करके हमें कृतार्थ करे। लेकिन आपके शरीर पर जो भी वस्त्र है वह भी फटा हुआ है। मैं

आपको वस्त्र देता हूँ। ब्राह्मण ने कहा प्रभु ! फिर उस वस्त्र का मूल्य देने भरको हमारे पास दूसरा रुपया नहीं है। महाराज हम फटे कपड़ो में बसर कर लेंगे लेकिन आपका ऋण अब मैं लेना नहीं चाहता। आप मेरी भेंट स्वीकार कर लीजिये। महाराज उस ब्राह्मण के सामने देखते रहे, मन ही मन विचार कर रहे थे कि कितना पवित्र ब्राह्मण है, इसकी अन्तरात्मा कितनी पवित्र है। बाद में मुक्तानंद स्वामी की तरफ देखकर महाराज ने कहा, इस ब्राह्मण का कुछ काम करना शेष रह गया है। हाँ महाराज अक्षरधाम जाने का काम बाकी है। अक्षरधाम जाने का सभी साधन पूरा करलिया है।

समझदारी तथा महिमा ये दोनो शब्द वचनामृत है और सत्संग के लिये प्राण समान है। जीवन में यह आजाय तो जीवन की सम्पूर्ण सार्थकता समझनी चाहिये। यही मानव मात्र का धर्म होना चाहिये। इस तरह कब तक शब्द के मर्म को समझाते रहेंगे।

''रवि रवि करतां रे रजनी नहि मटे रे।
अंधारुं तो ऊंग्या पूंढे जाय ॥''

पेज नं. ४ के

पूजा कही जायेगी। अन्यथा वह पूजा नहीं, वह श्रम कहा जायेगा। इस लिये भक्त को चाहिये कि स्वयं माला बनाकर भगवान को अर्पण करे। भावात्मक माला को भी प्रभु स्वीकार करते हैं। प्रसादी की माला पुजारी दें तो उसे श्रद्धापूर्वक लेकर आंख से लगाकर - गले से लगाकर सुरक्षित रखनी चाहिये। उसे जहाँ तहाँ नहीं रखना जाहिये या फेंक नहीं देना चाहिये। ऐसा करने से अपने इष्टदेव का अपराधहोता है। उसे अपने घर में सुरक्षित रखना चाहिये। यदि बहुतजीर्ण हो जाय तो तुलसी के कियारी में अर्पण कर देना चाहिये।

इसी तरह किसी भी मंदिर में भगवान की सेवा करने वाले पुजारी भगवान की सेवा के उपकरण वस्त्र, छत्र, चामर, वासन इत्यादि में मर्यादा न रखे और यत्र-तत्र रख दे तो उस पुजारी को आसुरी बुद्धिवाला कहा जायेगा। उस पुजारी की सेवा से कोई लाभ नहीं होता है। सत्संगी अपने घर में भगवान को भोग लगाते समय या पानी अर्पण करते समय बहुत ध्यान रखें। भगवान का वर्तन भी अलग रखें।

भगवान सहजानंद स्वामीने शिक्षापत्री श्लोक १२१ में लिखा है कि धाम में विराजमान प्रभु मानकर जो पूजा करेंगे उन्हें हम मुक्त मानते हैं।

भगवान को धन अर्पण करना, भोग लगाना, भगवान का जहाँ मंदिर हो वहाँ पर सेवा करना यह सभी कार्य श्रद्धा भक्ति से करना चाहिये। श्रीहरि के शरीर का एक अंग बनना चाहिये। भगवान के स्वरुप संबन्धी पदार्थ के उपयोगी बनना चाहिये। भगवान जिस अलंकारो को धारण करते हैं वे अक्षरधाम के मुक्त हैं। इसीलिये श्रृंगार आरती के समय भक्तों की भीड़ अधिक होती है।

अपने आगामी उत्सव

कार्तिक शुक्ल-११ ता. २५-११-१२ अमदावाद मंदिर में रविवार को रंग महोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव।

कार्तिक शुक्ल-१४ ता. २८-११-१२ मंगलवार सिद्धपुर मंदिर पाटोत्सव।

कार्तिक कृष्ण-२ ता. ३०-११-१२ शुक्रवार सुरेन्द्रनगर मंदिर पाटोत्सव।

कार्तिक कृष्ण-४ ता. ३-१२-१२ सोमवार बामरोली मंदिर पाटोत्सव।

मार्गशीर्ष शुक्ल-४ ता. १६-१२-१२ रविवार धनुर्मास प्रारंभ

मार्गशीर्ष शुक्ल-५ ता. १७-१२-१२ सोमवार गांधीनगर मंदिर पाटोत्सव।

मार्गशीर्ष शुक्ल-६ ता. १८-१२-१२ मंगलवार हिमतनगर मंदिर पाटोत्सव।

प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी न्युजीलेन्ड)

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)
सहयोग : पार्षद श्री कनुभगत गुरु पार्षद वनराज भगत

अपने सत्संगी के यहाँ सुबह में ही एक बड़ा अधिकारी आपहुंचा । किसान खाट को बिछा दिया । साहब इस पर बैठिये । साहब बैठे गये । बाद में किसान ने चाय-पानी के लिये कहा । साहब ने कहा पटेल ! आप भी साथ में लीजिये । किसान ने कहा अभी मेरी पूजा बाकी है । साहब सत्संगी नहीं था इसलिये कहा, आपलोग स्वामिनारायण वाले हैं इस लिये ये सब है । नहाना-पूजा करना ? यह सुनकर किसान ने एक बात कही । एक बार हम बेटे के विवाह से सम्बन्धित सामग्री खरीदने के लिये गाडी में बैठकर गाँव में खरीदी करने गये । बोरा भरकर शक्कर, चावल तथा अन्य राशन सामग्री साथ ले आये । लेकिन बोरे में एक छिद्र था जिससे पूरे रास्ते थोड़ा-थोड़ा गिरता आया, उस शक्कर का स्वाद लेने वाले चीटी जैसे छोटे जीव आनंद ले रहे थे । उसी समय उस रास्ते से एक गदहा निकला, ऊँट निकला लेकिन बड़े जानवर को इसकी गंधतक नहीं आई . वे सभी शक्कर के ऊपर धूल उडाते चले गये । इसी तरह हम सभी चीटी जैसे छोटे जीव है । इस सत्संग का आनंद लेते रहते हैं । आप तो बड़े आदमी है । अर्थात् उस अधिकारी को किसान ने गदहा जैसे बना दिया । इस तरह महाराज ने किसी को भी गाली देने के लिये मना किया है । परंतु किसान ने दृष्टांत देकर साहब की बराबरी गधे जैसे कर डाली ।

हम सत्संग का आनदं ले रहे हैं । इस मनुष्य का जीवन अल्प है । हमें जो समय मिला है उसी में अपना काम कर लेना चाहिये । कौन बनेगा करोडपति आप लोग देखते है न ? हमारी जानकारी का जब प्रश्न आता है, इनाम मिलने के समय ही समय समाप्ति का बेल बजता है । अब कल ! इस तरह हमारे समय समाप्ति की धोषड़ा हो जाय और हमारा भी पुण्य कार्यबाकी रहजायेगा । कलकत्ता में लाला बाबू नामक एक सेठ रहता था । गंगा के किनरे घूमने निकला । उसी समय एक नाविक जोर जोर से चिल्ला रहा था, ''जिसे आना है वह आजाय ।'' यह अन्तिम फेरा है फिर दुवारा नहीं आयेगा ? यह शब्द शेठ के कान में पड़ा उनके जीवन का परिवर्तन हो गया । अन्तिम फेरे की वात सुनकर - घरबार छोड़कर निकल पड़े । अपने नंद संतोने कीर्तन में गाया है कि -

''अबकी बेर फीर न आवे.....''

यह चान्स पुनः मिलने वाला नहीं है । कितने लोग क्या करते हैं खबर है ? एक अच्छी बात है ।

एक किसान का बगीचा था । उसका एक मित्र उसे मिलने के लिये गया । संयोगवश किसान वहाँ नहीं था । नजदीक के दूसरे बगीचे में गया था । पटेलानी अकेली थी । पटेलानी ने कहा - ''बैठिये, आपके मित्र अभी आ जायेंगे नजदीक के बगीचे में गये हैं । इस लिये वह मित्र वहाँ बैठ गया । पटेलानी किसी को बुलाने के लिये भेंजी और तुरंत ही आ गया । पटेल के साथ एक कुत्ता था । वह कुत्ता हांफ रहा था । यह देखकर मित्रने कहा, भाभी आप कह रहीं थी कि पटेल नजदीक की बाडी में गये है, परंतु यह कुत्ता तो हांफ रहा है । इससे यह स्पष्ट होता है कि पटेल कहीं दूर से आ रहे हैं । पटेल ने कहा कि मेरी पत्नी सत्य बोल रही है । मे जहाँ गया था वह बगीचा बहुत नजदीक है । रास्ते में दो-तीन बगीचा ही आता है । लेकिन हुआ यह कि दूसरे बगीचे के कुत्ते मेरे कुत्ते से झगड़ते गये जिससे सभी का सामना करने से यह हांफ रहा है । मनुष्य में भी ऐसा ही होता है । जन्म ले सेकर अन्तिम समय तक बहुत अच्छा है । बहुत नजदीक में हैं । सभी टेकनिकसे जीव के कल्याण का कार्य कर सकता है । परंतु कितने लोग झगड़ा करने में हांफ जाते हैं ।

हमें बड़ा सुन्दर समय महाराजने दिया है । देवों को

भी दुर्लभ एक तरफ शास्त्रकार कहते हैं कि मनुष्य देह नाशवंत है । अनाज जैसी पवित्र वस्तु को भी एकत्रित नहीं कर सकता । २४ घन्टे में उसे मल बना देता है । दूसरी तरफ शास्त्र कार कहते हैं कि मनुष्यदेह देवों को भी दुर्लभ है । कारण यह कि इसी शरीरसे भगवान को प्राप्त किया जा सकता है । प्रभु की प्राप्ति का साधन देह है । इस शरीर से ही भगवान की भजन सम्भव है जो बड़े भाग्य से प्राप्त हुई है । उसकी महिमा समझकर महाराज को प्रसन्न करलेना चाहिये ।

सामान्य ढंग से देखें तो धाम में जाने का तथा गाँव में जाने का मार्ग अलग-अलग है । परंतु महाराजने हम सभी के लिये एक ऐसा मार्ग ढूंढकर दिया है जो गाँव में से धाम में जाने का मार्ग है । महाराज को पाने के लिये गाँव या संसार छोड़ने की जरुरत नहीं पड़ती । नारदजी एक बार घूमते घूमते भगवान के पास पहुंचे । भगवानने उन्हें एक काम सौंपा । नारदजी सिखा रखते हैं । भगवान ने कहा कि - इस राई के एकदाने को अपनी शिखा पर रखकर पूरी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके मेरे पास अइयें । नारदजी ने आज्ञा-शिरोधार्य करली । राई के दाने को अपनी शिखा पर रखकर पूरी पृत्वी की प्रदक्षिणा करके भगवान के पास आये । आकर कहे प्रभु ! मैं थक गया हूँ । कारण यह कि इस राई का ध्यान रखू या आप का ध्यान करुं ? परमात्मा ने कहा, देखिये नारदजी ? आप एक राई के दाने को बचाने में ही थक गये । जब कि गृहस्थ को कितने दानों का ध्यान देना पड़ता है । व्यवहार करना पड़ता है - फैमिली, बिजनेश तथा अन्य कार्य करते हुये भजन भी करता है । महाराज ने हम सभी को बड़ा सुन्दर समय दिया है, इस अवसर को जाने नहीं देना चाहिये । सुखपूर्वक भजन करना चाहिये ।

नंदसंत बात करते, जगत के जीव बहुत सुन्दर जीवन जीते हैं । भक्तिमय जीवन के साथ जिसकी मृत्यु होती है वह परमधाम को प्राप्त करता है । जिसका एक मात्र शरीर ही साधन है । इसलिये इस शरीर की उपयोगिता यह है कि महाराज के प्रगटपना का भाव समझकर भजन-सेवन करलेना चाहिये ।

स्वामीने व्यसन की बात की पहले जमाने में अफ्रिका के जंगलमें आदिवासी बन्दरो को पकड़ने के लिये घट जैसा वर्तन रखा जाता । उसका मुख पतला होता था । उसमे चना भरदेते । लेकिन स्वयं दूर रहते थे । बन्दर चना लेने के लिये वासन में हाथ डालते, चना लेकर मुट्ठी बन्द करलेते, लेकिन जब हाथ बाहर निकालते तो नहीं निकलता था चना छोड़ देते तो खाली हाथ बाहर आजाता । परंतु उन्हें यह बुद्धि नहीं आती थी । उन्हें ऐसा होता कि चना हमें पकड़ लिया है । परंतु चना को बन्दरों ने पकड़ा है । इसी तरह मनुष्य भी यही मानता है कि व्यसन हमें पकड़ा है लेकिन ऐसा नहीं हमने ही व्यसन को पकड़ा है ।

महाराज के समय में स्वयं महाराज भी एक गाँव से दूसरे गाँव विचरण करते थे । उस समय एक काठी दरबार दूर खड़ा था । महाराजने सुराखाचर से पूछा कि वह दरबार क्यों दूर खड़ा है । सूरा खाचरने कहा कि उसकी वात जाने दीजिये, वह व्यसनी है । महाराजने कहा, उसे अपने साथ लेलीजिये । सुरा खाचर ने कहा कि ऐसी छूट करेंगे तो सभी आपके साथ रहने को तैयार हो जायेंगे । महाराजने कहा, अपने साथ लेलीजिये । महाराजकी आज्ञानुसार उसे अपने साथ लेलिये । महाराजके साथ सभी काठी दरबार घुड़सवार होकर चल दिये । लेकिन साथ चलने वाले दरबारके हाथ में हुंक्का था । जहाँ से सभी निकलते सभी यही कहते सभी स्वामिनारायण के सत्संगी है लेकिन यह एक दूसरा सत्संगी नहीं लगता । यह सुन्दर बड़े क्रोधमें अपने हाथ का हुक्का उसी समय धरती पर डाल दिया । आगे जाकर रात्रि में एक जगह रुकना पड़ा । दूसरा दरबार अफीम का व्यसनी था लेकिन उसे अफीम मिले कहाँ ? धीरे धीरे वह नशा छोड़ने लगा । इसी तरह जब हम सत्संग की भीड़ में रहेंगे तो अपने आप सभी दोष खत्म होजायेगा । इसका मतलब यह नहीं कि दोष चालू रखना, लेकिन भीड़ में रहने से फायदा जरुर होता है ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

स्वस्ति श्री जेतलपुर महा शुभ स्थाने विराजमान उत्तमोत्तम सर्व शुभ उपमा योग्य बाई गंगा एतान श्री नरनारायणना समीप थी लिखावित स्वामिश्री सहजानंदजी तथा बाई सजबा ना नारायण वांचजो । अपर लखवाकारण ए छे जे जसबा ए मने कह्युं छे के आसजी पासे रुपिया १७५/- पोणा बसो छे ते रुपिया नरनारायण निमित्त लेवा वैराग्यानंद स्वामी जाय छे ते जोइए छे ते रुपिया तमे आपजो अने तमारे ज्यारे जोइशु तमारा रुपैया अमे पाछा आपशुं ।

म्युजियम के प्रारंभ से ही हरिभक्त एक-एक खंड का दर्शन करके अहो भाग्य का अनुभव करते हैं । श्रीजी महाराज की प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करने के बाद जिस तरह स्वप्न में एक के बाद एक सोना, चांदी, हीरा, मोती, माणेक इत्यादि खजाना का पेटारा खुलता देखें ठीक वही स्थिति यहाँ पर है ।

सभी खंड के दर्शन के बाद अन्तिम खंड के आगे आकर दासभाई से आकर पूछा जाता है, यह खंडबन्द है ? इसमें क्या है ? यह क्यों बन्द है ? हम इस खंड का भी दर्शन करना चाहते हैं ।

जिस तरह अमृत की प्राप्ति दुर्लभ है, लेकिन श्रीजी महाराजने आज से १९३ वर्ष पूर्व अमृतवाणी का पान कराया था । जिसमें जीव, माया, ईश्वर तीन भेद है और वह अनादि है फिर भी पुरुषोत्तम भगवान, अक्षरब्रह्म, माया, ईश्वर, जीव पांच भेद अनादि है इस तरह के प्रश्न को शा.स्वा. निर्गुणदासजीने रविवार ता. २१-१०-१२ को सायंकाल ४-०० से ६-०० बजे तक अन्तिम खंड में समझाया । प्रश्न गंगारामभाई ने किया और अमृतवाणी का दुर्लभ लाभ हरिभक्तों को अन्तिम खंड में मिला ।

स्वामिजीने बताया कि हम सभी की बड़ी भाग्य है कि नंद संतोने खूब अथक परिश्रम करके महाराज की मूर्ति का तद्रुप वर्णन करके वचनामृत को सत्संग के लिये आध्यात्मग्रन्थ प्रदान किया । मन को शुद्ध करने वाला, जीव को भगवान में जोडने वाला वचनामृत अमूल्य ग्रन्थ है । अपने स्वभाव में परिवर्तन करती हो, आत्म स्वरुप को पहचानना हो भगवान के माहात्म्य को समझना हो तो वचनामृत का यथार्थ ज्ञान होना आवश्यक है ।

म्युजियम के अन्तिम खंड में प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में हरिभक्तों को ऐसी अनुभूति हुई ।

- महादेव सी. पटेल

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अक्टूबर-२०१२

प.पू. बड़े महाराजश्री की अमेरिका यात्रा के समय स्वामिनारायण म्युजियम के लिये प्राप्त भेंट

रु। २,५०,१००/- अमरीष तथा कामिनी पटेल, शिकागो

रु। २,५०,०००/- हिरेन तथा गोपी पटेल, शिकागो

रु। १,५०,०००/-महेन्द्र तथा कोकिला पटेल, शिकागो

रु। १,००,०००/-श्री स्वामिनारायण मंदिर, एल.ए.

रु। ५०,०५०/- रुपेश ब्रह्मभट्ट, एटलान्टा

रु। ५०,०००/- मनोज ब्रह्मभट्ट, डिट्रोईट

रु। ३०,५००/-सौमिल वी. पटेल शिकागो

रु। २५,०५०/-सुमीत वी. पटेल शिकागो

रु। ४,८००/-श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

★★★

रु। १,००,०००/-करशनभाई जीणाभाई जेसाणी, बलदिया-कच्छ

रु। १,००,०००/-भीमजीभाई वेलजीभाई टांक, बोडका

रु। ५०,०००/-प.पू. बड़े महाराजश्री की बहन प.पू.अ.सौ. राजेन्द्रकुमारी तथा रुपल राजा, सोनीराजा श्री रतन बाबू की तरफ से।

रु। २५,०००/-प्रहलादभाई पटेल, परेशभाई पटेल, अमदावाद

रु। ११,१११/-अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब के भक्तगण

रु। ११,०००/-अंकुरभाई धीरजभाई पटेल, अमदाबाद

रु। ११,०००/-पूनमभाई मगनभाई पटेल, अमदाबाद

रु। ११,०००/-अ.नि. दिनकरराय मेहता की पुण्यतिथी के निमित्त

रु। ११,०००/-सजनी फेसन, निकोल

रु। १०,००१/-सुधाकरभाई त्रिवेदी, अमदाबाद

रु। ७,०००/-पटेल घनश्यामभाई बापूदास, राणीप

रु। ६,०००/-पंचाल कौशल बलदेवभाई, नारणपुरा

रु। ६,०००/-अ.नि. शांताबहन लवजीभाई सोलंकी, अमदावाद

रु। ५,५००/-वासुदेवभाई गज्जर, नारणपुरा

रु। ५,००१/-चंपाबहन गंगाराम पटेल, भुयंगदेव

रु। ५,०००/-कांतिभाई एम. कोन्ट्राकटर, आंबावाडी

रु। ५,०००/-हितेन्द्रभाई एम. दरजी (एडवोकेट)

रु। ५,०००/-हेमंत मथुरभाई पटेल, अमदाबाद

रु। ५,०००/-महेशभाई एस. पटेल, वापी

रु। ५,०००/-घनश्यामभाई एन्जीयरिंग वर्क्स, बोपल

रु। ५,०००/-अरुणभाई जमनादास लखतरिया, अमदावाद

रु। ५,०००/-कौशिकभाई जोशी, अमदावाद

रु। ५,०००/-गोकुलभाई पटेल, अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अक्टूबर-२०१२)

ता. ६-१०	ललितकुमार जगजीवनराम ठक्कर, अमदावाद
ता. ६-१०	अरविंदभाई आर. दोंगा, बापुनगर
ता. ६-१०	वालजीभाई प्रेमजीभाई सभाडीया, मुंबई
ता. ७-१०	भीखाभाई गोविंदभाई परमार, नवावाडज
ता. १०-१०	श्री स्वामिनारायण महिला मंडळ, विराटनगर
ता. १३-१०	प.पू. बड़े महाराजश्री कृते संदीपभाई, अमृतभाई, चिरागभाई
ता. १४-१०	श्री स्वामिनारायण महिला मंडल, कालुपुर
ता. २०-१०	मनजीभाई शिवजीभाई हीराणी, कच्छ
ता. २१-१०	कांताबहन नटवरलाल पूंजारा, अमदावाद
ता. २४-१०	विश्राम लालजी पींडोरिया, माधापर-कच्छ
ता. २४-१०	(सायंकाल) प.पू. आचार्य महाराजश्री के जन्मोत्सव निमित कृते सां.यो. विमलाबा, मुकेशभाई
ता. २४-१०	प्रसादी के गणपतिजी की स्थापना तथा पूजन (प्रकाशभाई मूलजीभाई काचा - लेस्टर यु.के.)
ता. २६-१०	अ.नि. कमलाबहन गजानंद जादव-मणीनगर
ता. २७-१०	श्री स्वामिनारायण महिला मंडल, बापूनगर
ता. ३०-१०	डॉ. मनोज जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट, अमेरिका कृते संदीपभाई

सत्संगबालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

जनहितकारी श्रीहरि

(शा. हरिप्रियदास - गांधीनगर)

लींबडी के राजा का स्वभाव एकदम नीम की पत्ती की तरह था । जगत के व्यवहार से अलग था । भगवान को इस वात का ख्याल था । मनुष्य जब कपट करता है तो निश्चित समझना चाहिये कि वह कष्ट को आमंत्रण दे रहा है । जैसी जिसकी प्रकृति हो वैसा वह वर्तन करे तो उसे कभी तकलीफ नहीं आयेगी । ईश्वरीय सृष्टि में प्रत्येक प्राणी अपनी प्रकृति के अनुसार वर्तन करता है । जैसी जिस जीव की प्रकृति होती है वैसा वह आचरण करता है । कुत्ता रास्ते में बैठा हो तो उससे थोड़ा दूर होकर सभी लोग जाते हैं - क्योंकि उसका स्वभाव काटने का है, वह काट न ले, इसलिये थोड़ी दूरी प्रकृति को ध्यान में रखकर रखते हैं । परंतु मनुष्य अपनी प्रकृति को छिपाता है । लींबडी के उस राजा का नाम हरिसिंह था । स्वामिनारायण भगवान के साथ द्वेष रखता था । फिर भी प्रेम करने का दिखावा करता था । सोने का धंधा था नारायणभाई का नारायण भाई को कहता है, स्वामिनारायण भगवान को स्वागत पूर्वक लींबड़ी शहर में लेआओ । नारायणभाई भगवदीय आत्मा थे । वे प्रसन्न हो गये कि लींबडी के राजा भगवान स्वामिनारायण का सन्मान करेंगे । वहाँ के भक्तों को समाचार मिला कि महाराज यहाँ पधार रहे हैं इससे उनके आनंद की सीमा न रही । सभी भक्तजन शहर के बाहर स्वागत हेतु खड़े हो जाते हैं । नारायणभाई सबसे आगे जाकर महाराज से कहते है कि, महाराज ! हमें तो यहाँ के राजाने आपके स्वागत के लिये भेजा है । इसलिये आप लींबडी शहर के राजा के यहाँ पधारें । महाराजा ने कहा कि भक्तराज ! आप बड़े सरल और श्रद्धावान है, आपकी मुझ में अधिक श्रध्धा है, लेकिन राजा की श्रद्धा है कि नही यह मैं जानता हूँ अभी मैं उसके यहाँ नहीं आऊँगा, शहर के बाहर से आगे के लिये प्रस्थान करुंगा । लेकिन महाराज ! आपके बहुत सारे हरिभक्त आपके स्वागत हेतु खड़े है । प्रभु ने कहा, आप जाकर सभी भक्तों से कहिये कि शहर के बाहर आकर मेरी पूजा करलें हम भीतर नहीं आयेंगे । नारायणभाई के मन में हुआ कि महाराजने शहर में आने के लिये क्यों मना कर रहे हैं । फिरभी नारायणभाई सभी को साथ लाकर पूजा विधिकरता हैं । बाद में महाराज उस शहर के बाहर से ही आगे निलक जाते हैं । नारायणभाई शहर के मुख्य द्वार से जब भीतर जा रहे थे वहाँ उहोंने देखा कि बहुत सारे लोग हाथ में मिट्टी-कीचड धूल, पत्थर इत्यादि लेकर छिपकर खड़े है । वे सभी राजा के पूर्व आयौजनानुसार जब महाराज उस मुख्य द्वार से भीतर घुसे उसी समय उनके ऊपर सब फेंकना है । यह अन्दाज नारायणभाई को आगया और इसी रहस्य को समझने में उन्हें देर नहीं लगी कि महाराज क्यों शहर में नही आये ।

नारायणभाई सोनी कोई ऐसे तैसे नहीं थे। सुखी थे । पैसेवाले थे, शूरवीर भी थे । यह दृ-श्य देखने के बाद उनके मन में हुआ कि मेरे इष्टदेव इस कारण शहर में पदार्पण नहीं किये । उसी समय दादा खाचर तथा सोमला खाचर नारायणभाई केपास आते हैं और कहते है किचलये आपके राजा के पास महाराजने कहा है कि आपलोग राजा से मिलकर आइये । नारायणभाई के मन विचार आया किप्रभु कितने दयालु है, वे इस रहस्य को जानते थे कि मैं शहर के भीतर जाऊँगा तो राजा मेरा अपमान करेगा और यह हमारे भक्तों को बरदास्त नहीं होगा परिणाम खराब आयेगा, हमारे भक्त परेशान हो जायेंगे । अपने भक्तों को इस परेशानी से दूर रखने के लिये महाराजने ऐसा किया । महाराज की आज्ञा से दादा खाचर तथा सोमला खाचर लींबडी के राजा से जाकर मिले । राजा से कहे कि आप क्या चाहते है ।

आप स्वामिनारायण भगवान के ऊपर धूल-पानी पत्थर क्यों डालना चाहते थे । आपको पता नहीं कि उनके साथ हमलोग ऐसे है कि चुटकी बजाकर सभी लीला खतम करदें । यदि आपको मन में भाव आये तो प्रणाम कीजियेगा, भाव न हो तो घर बैठे रहियेगा, फिर कभी इस तरह की तूफान पैदा करदेने वाली हरकत मत कीजियेगा । हमारे भगवान बड़े कृपालु हैं, बाहर से ही चले गये । यदि वे आपके शहर के भीतर आते और धूल प्रक्षेप करते तो हम लोग चुप नहीं बैठते । कारण कि हम भी क्षत्रिय है, हमारे भीतर भी क्षत्रिय का खून है । हरिसिंह राजा को ऐसा हुआ कि बात तो सत्य है । हमारे पास तो मात्र एक लींबडी का ही राज्य है और सैन्य बल भी ५०-६० का है । जब कि स्वामिनारायण के पास हजारों काठी दरबार हैं । इतना कहकर दोनो भक्त दादा खाचर तथा सोमला खाचर वापस आगये । लींबडी से थोड़ी दूर भलगाँव है । वहीं पर जाकर महाराज विश्राम ले रहे थे कुछ समय के बाद दोनो भक्त राजा का समाचार लेकर पहुंचे । महाराजने कहा कि कुछ अधिक नहीं बोले न ! नहीं महाराज उन्हें सबक तो सिखाकर आये है, कि ऐसा पुनः करियेगा नहीं अन्यथा आपका भी अहित होगा ।

भक्तों ! कैसी बात है । भक्तजन हितकारी भगवान भक्तों की सुख-शांति चाहते रहते हैं । भगवान जो करते है वह अच्छे के लिये करते हैं । ऐसा विश्वास रखना चाहिये ।

हुं हरिनो हरि मम रक्षक,
ए भरोसो जाय नहीं ।
जे हरि करशे ते मम हित छुं
ये निश्चय तजाय नहीं ।

इस तरह का विश्वास रखकर भगवान की भजन करनी चाहिये । इससे जीवन में सदा दीवाली बनी रहेगी ।

बालवाटिका वाचक बाल मित्रो को श्रीहरि स्मरण के साथ नूतन वर्ष का जयश्री स्वामिनारायण तथा नूतन वर्षाभिनंदन ।

•

सुरवका मार्ग चरित्र चिन्तन

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

सुख तथा दुःख का दो कारण है मुक्ति एवं बन्धन । जहाँ जहाँ बन्धन है वहाँ वहाँ दुःख है । जहाँ जहाँ मुक्त वातारण है वहाँ वहाँ सुख है । भक्त कवि नरसिंह महेता पत्नी-पुत्र से मुक्त होते ही बोल उठे -

''सारुं थयुं भांगी जंजाल, सुखे भजीशुं श्री गोपाल ।''

परंतु बन्धन में से मुक्त होने की मास्टर की वैराग्य है । यदि वैराग्य हो तो जीव बन्धन से मुक्त हो सकता है । वही वैराग्य भी कैसा जिस तरह भगवानने समझाया है, भगवान स्वामिनारायण का एक नाम ''तीव्र वैराग्याय नमः'' है । तीव्रवैराग्य का मतलब सामान्य नहीं अपितुं उत्कट वैराग्य ।

कितना प्रबल वैराग्य रहा होगा प्रभु का जो ११ वर्ष की उम्र में अपने अति स्नेह वांले भाई-भाभी को त्याग करके, घर-सम्पत्ति को त्याग कर नंगे पांव जंगल के लिये प्रस्थान कर दिये । यह कल्पनातीत त्याग कहा जायेगा । मनुष्य १०-१५ दिन के लिये कहीं जाता है तो पेटी भरकर कपड़े तथा अन्य साधन सामग्री लेकर जाता है । जबकि भगवान स्वामिनारायण जब घर त्याग किये तो अपने साथ कुछ नहीं लिये, इतना ही नहीं नंगे पाँव निकल पड़े । इसीलिये तो उन्हें तीव्र वैराग्यवाला कहा गया है ।

जब तपस्यापूर्ण हुई तो पुलहाश्रम से नीचे उतरकर बुटोलपुर आये । गाँव के बाहर विश्रांति लिये । तीव्र वैराग्य की यह कथा सुनने लायक है । मयारानी उस नगर की रानी थी । वही राज्य चलाती थी । उस राज्य से वर्णिराज को जाते देखकर आकृष्ट हो गयी । तपस्या से तप शरीर की आभा उन्हें आकृष्ट करली । उन्हें ऐसा लगा कि यह कोई अलौकिक दिव्य मूर्ति हैं । ये वर्णी यहाँ आते तो मेरी जिन्दगी तरजाती । बेड़ापार हो जाता । मेरी सभी चिंता का समन हो जाता । हमारी दो बेटियां है उन्हें कहीं विवाहित करके विदा करना है, यह सुवर्ण अवसर आज

प्राप्त हो गया वर्णिराज से उन्होंने जाकर पूछा वर्णिराज ! आप हमारे महल में पधारेंगे ? प्रभु ने कहा मैं किसी महल या राज्य में पधार सकता नहीं हूं । मैं कहीं नहीं जाता । रानी ने भावपूर्वक आग्रह किया तो महाराजने महल में जाने के लिये हाँ कर दिया । महल में दिव्य स्वागत किया गया । बाद में रानीने अपने मन की वात वर्णी को बताई । वर्णी से कहा कि अब आप की जवानी आरही है, मेरी इच्छा है कि आप इसी महल में आप रहजाइये, आप को यह सम्पूर्ण राज्य दे दूं और मेरी दोनो बेटियों को आप स्वीकार कर लीजिये ।

ग्रहो कुंवरी मारी दोय राजा धरी स्थापुं ।
घणा गाम दंती पैदल हुं प्रेमथी आपुं ॥

कृपा करके मेरी वात मान जाइये । वर्णीराजने मनाकर दिया । हमें राज्य की या गृहस्थाश्रम की कोई जरुरत नहीं है । मयारानी को संस्कार का अनुभव था । वर्णी के वैराग्य की खबर नहीं थी इसलिये वे करती है कि फिर आगे पछताओंगे ।

''ज्यारे थाशे जोबन भेर पछी पस्ताशो ।''
जब युवानी का जोर आयेगा तब पछताओंगे ।

मली बुटोलपुरनी मांही, कहे छे मयारानी'' ॥

मयारानी हाथ जोड़कर कहती है कि आप यहीं रुक जाइये । मनाने के बाद जब मना कर दिये तब रानी ने चौकीदारों से कह दिया कि सावधान रहना, वर्णी यहाँ से जाने न पावें । वर्णीराज मन में हंस रहे थे । तुम्हारी क्या ताकत जो तूं मुझे रोक ले । चौकीदारों को खबर भी नहीं पड़ी और वर्णीराज वहां से चल दिये । यही तीव्र वैराग्य का अद्‌भुत उदाहरण है । जिसे वैराग्य नहो वह इधर-उधर भटकता रहता है । आसक्ति को पूर्ण करने के लिये नाना प्रकार का प्रयत्न करता है । जिसमें विषयाशक्ति का लेशमात्र भी प्रवेश न हो वही तीव्र वैराग्यवाला कहा जायेगा ।

गीता में कहा है कि हे अर्जुन ! मेरा जन्म तथा कर्म दोनो दिव्य है । जो इस दिव्य जन्म-कर्म को जानलेता है वह पुनः जन्म धारण नहीं करता । इसलिये सतत सचेत होकर भगवान के चरित्र का श्रवण एवं गुणानुवाद करते रहना चाहिये । इससे जीवकृतार्थ हो जाता है । जीव में वैराग्य का भाव आता है । वह जीव धीरे धीरे बन्धन से मुक्त होकर प्रभु को प्राप्त करलेता है ।

अपने नूतन प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की तरफ से (१) हजारी कीर्तनावलि (पुनः प्रकाशन) (२) भक्त चिंतामणी (३) स.गु. निष्कुलानंद काव्य इन तीन पुस्तकों का विमोचन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४० वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर विधिवत संपन्न हुआ । यह साहित्यकेन्द्र से प्राप्त होगा ।

इसनपुर से जेतलपुर रुट नं. ३० लाल बस प्रारंभ की गई है

अमदावाद म्युनिसिपल कोर्पोरेशन द्वारा इसनपुर से ३० नंबर की लाल बश प्रारंभ की गयी है । जो २०-२० मिनट पर मिलेगी । जेतलपुर बलदेवजी दादा के दर्शनार्थ जानेवाले हरिभक्तों को एक अच्छी सुविधा मिल गयी है ।

नूतन प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. हरिकेशवादसजी द्वारा लिखित पुस्तक में शास्त्रो में से प्रामाणिक प्रसंगो का संग्रह करके सभी सद्‌गुण आवे इस भावना से संकलन किया गया है । इस पुस्तक के माध्यम से नई पीढी को प्रेरणा मिलेगी । वांचने तथा संग्रह करने लायक यह पुस्तक है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४० वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर उन्हीं के कर कमलो में अर्पण की गयी थी ।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्य का पता बदलने या अंक न मिलने से सम्बन्धित अपने ग्राहक नंबर को अवश्य सूचित करें । ग्राहक नंबर विना कोई सिकायत सुनी नहीं जायेगी । (संचालकश्री)

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"किया हुआ कर्म तथा धर्म ही साथ आता है"
(संकलन : कोटक वर्षा-नटवरलाल - घोडासर)

हम सत्संग करते हैं, मंदिर जाते हैं, कथा श्रवण करते हैं फिर भी आत्मकल्याण के लिये कथा श्रवण के बाद मनन चिन्तन के बाद जीवन में आचरण करना भी जरुरी है । क्योंकि, कर्म सभी को करना ही पड़ता है । इसलिये विचार कर जीवन जीना चाहिये । अपने भीतर धर्म तथा अधर्म का युद्ध सदा चलता ही रहता है । प्रात: उठते ही ऐसा होता है कि प्रात: हो गया ? चार बज गया अभी दो घन्टे और सोधते है । ६ बजे उठेंगे तो भी चलेगा । ऐसा होता है न ! जो इस तरह सो जाने की सीख देता है वह कौन है ? दुर्योधन है, जो अधर्म का प्रतीक है । जो जागने की बात करता है वह कौन है ? युद्धिष्ठिर है, जो धर्म का प्रतीक हैं । इसलिये हमे विवेकी होकर विचार करना है कि हित किसमें हैं । जीवात्मा कर्म करने के लिए स्वतंत्र है । परमात्मा कर्म करने के लिये बाधा उपस्थित नहीं करता । मात्र भीतर बैठकर आप जो कर्म करते है उसे द्रष्टा के रुप में देखता है । मनुष्य जो कर्म करता है उसका फल देता है । किये हुये कर्म का फल परमात्मा की इच्छा से मिलता है । स्वयं ही इच्छानुसार फल मिलता हो तो कोई पुरुषार्थ ही नहीं करेगा । पानी -पानी बोलने से तृषा की तृप्ति नहीं होती । पानी पीना ही पड़ता है । सिंह जंगल का राजा है, फिर भी उसे शिकार करने के लिये हिरण के पीछे दौड़ना पड़ता है । कोई परोसी हुई थाली दे तो भी भोजन तो स्वयं करना पड़ता है । कोई मुख में ग्रास डाल दे तो भी जबाना तो पड़ेगा ही । स्वर्ग में जाना हो तो मरना पड़ता है । कहने का तात्पर्य यह है कि कल्याण की चाहना हो तो आध्यात्म क्षेत्र में आगे आने के लिये स्वयं पुरुष प्रयत्न करना पड़ेगा । इसके लिये प्रबल इच्छा शक्ति तथा प्रबल आत्मनिष्ठा की जरुर है । शास्त्र हमें मार्गदर्शन देते हैं । आपके मार्ग में अंधकार हो तो प्रकाश की व्यवस्था की जासकती है लेकिन चलकर जाना तो स्वयं पड़ेगा ।

एक राजा को चार रानी थी । उसमें जो सबसे छोटी रानी थी उससे राजा बहुत प्यार करता था । वस्त्र-अलंकार इत्यादि आवश्यक वस्तु लाकर देता था । तीसरी रानी का भी ख्याल करता था । उसके साथ भी कीमती समय विताता था । दूसरे नंबर की रानी स्वयं राजा की मदद करती थी । उन्हें सलाह-सूचन की आवश्यकता होती तो सहायक बनती । लेकिन पहले नम्बर की रानी से थोड़ा भी सम्बन्धनहीं रखता था । एकबार राज विमार पड़ता है, उसका अन्तिम समय आता है । राजा अपनी चारो रानियो को पास बुलाता है । चौथी पत्नी से जिससे बहुत प्रेमकरता था उससे पूछता है मेरे जाने का समय आ गया है मेरे साथ आओगी ? सुनते ही रानीने मनाकर दिया कि मैं आपके साथ क्यों आऊँ । राजा तीसरे नम्बर की रानी से पूछता है तूं तो मेरे साथ आयेगी न ! हम तुम्हारा बहतु ख्याल करते थे । तीसरे नम्बर की पत्नीने कहा कि आपके मरते ही हम दूसरे के साथ चली जायेंगी । राजा दूसरे नंबरकी रानी से पूछता है कि तुम हमें सही दिशा-मार्गदर्शन दिया करती थी, क्या मेरे साथ आओगी ? दूसरे नंबरकी रानी ने कहा हाँ, स्मशान तक, आपकी चिता जलने तक साथ रहूंगी । बाद में राजा जिसकी जीवन भर उपेक्षा करता रहा ऐसी प्रथम नं. की रानी से पूछा कि तुम मेरे साथ आओगी ? तो रानीने कहा हाँ हम आपके साथ आयेंगी । यह सुनते ही राजा को पश्चाताप होने लगा । जिसकी मैं पूरी जिन्दगी उपेक्षा किया साथ, सहकार नहीं दिया, कोई प्रेमकी भाषा नहीं बोला वही आज मेरे साथ जाने को कह रही है ? चौथे नंबर की रानी ही अपनी शरीर है । शरीर में से जब प्राण निकलता है तो शरीर के सभी अवयव काम करना बन्द कर देते हैं । शरीर साथ छोड़ देती है । शरीर के ऊपर से अलंकारादिक उतार लिये जाते हैं । तीसरे नं. की रानी धनदौलत मिलकत है । जिसको प्राप्त करने के लिये अथकपरिश्रम करते है दौड़धूप करते हैं । समय विताते है जो मरने के बाद दूसरे के पास चली जाती है । अग्नि संस्कार के बाद सभी झगड़ा करके उस सम्पत्ति का बटवारा करलेते हैं।

दूसरे नं. की रानी-अपने टुकुम्बीजन है । जो हमारे जीवन में सलाह-सूचन-दिशा-मार्ग इत्यादि बताते हैं । वे लोग हमारी शरीर का दाह संस्कार करने आते हैं । पहले नं. की रानी अपनी आत्मा है । तो सम्पूर्ण जीवन मनुष्य अपनी

शरीर के पीछे समय निकालता है, उसी के पीछे दौड़ता है। उसी को सजाता है, सौख-श्रृंगार करता है। इसी तरह धन दौलत कमाने में खूब समय देता है। उस धन को सुरक्षित रखने का नाना विधप्रयाश करता है। कुटुंबीजनों के लिये भी समय देता है। लेकिन पूरी जिन्दगी आत्मा की उपेक्षा करता है। जो हमें पूरे जीवन अच्छे काम करने के लिये तथा धर्ममय जीवन जीने के लिये अन्दर से प्रेरणा देता है, ऐसे उस आत्मा की आवाज सुनाई नहीं देती। अंत समय में कोई साथ नहीं आता, मात्र किया हुआ कर्म-धर्म ही साथ आता है। हम सभी को प्रत्यक्ष नरनाराणदेव मिले हैं। इसके साथ हम सभी को अच्छा सत्संग भी मिला है। महाराज खूब सरल कर दिये हैं। शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करना तथा शास्त्रों के नियमानुसार व्यवहार करना, शास्त्रविधिका उल्लंघन नहीं करना, यही जीवन की धारा होनी चाहिये। कब क्या हो जायेगा, इसकी हमें खबर नहीं। जीवन का कब अन्त हो जाये। यह अपने हाथ में नहीं है। इसलिये विवेकपूर्वक सत्संग करलेना चाहिये। हमें किस मार्ग पर चलना है इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। चाहे कितना ज्ञानी हो लेकिन विवेक न हो तथा धर्ममय जीवन नहो तो अन्त समय कुछ काम में नहीं आता। परंतु जो विवेकी लोग है वे यह समझते हैं कि यह क्षणभंगुर शरीर है, अनित्य है। मृत्यु सदा पीछे-पीछे ही चलती है। परंतु इससे परमपुरुषार्थ की प्राप्ति भी सम्भव है। इसलिये अनेक जन्मो के बाद यह दुर्लभ मानव शरीर मिला है इसका ध्यायन रखर बुद्धिमान पुरुष को चाहिये कि मृत्यु आवे उसके पहले ही मोक्ष प्राप्त करले। आप सभी को नूतन वर्ष में धर्ममय जीवन जीने का खुब बल मिले ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

•

कुशाग्र बुद्धि

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

अपने पवित्र भारत देश के सत्शास्त्र तथा संत कहते है कि जो मनुष्य अपने आत्यन्तिक कल्याण के लिये सतत प्रयत्नशील रहता है उसे कुशाग्र बुद्धिवाला समझना चाहिये। श्रीकृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि जिस बुद्धि से संसार का बन्धन तथा मोक्ष तत्व को जाना जाय वह सात्विक बुद्धि है। राजसी बुद्धि धर्म या अधर्म को नहीं समझ सकती। कार्याकार्य का भी विवेक उसके पास नही रहता। जब कि तामसी बुद्धि अधर्म को ही धर्म मानती है। धर्म को अधर्म मानती है। सत्पुरुष को असत् पुरुष असत् पुरुष को सत् पुरुष मानती है।

इस विश्व में दो प्रकार की विद्या है। एक परा विद्या दूसरी अपरा विद्या। परा विद्या परमात्मा के ज्ञान को देने वाली है। अपरा विद्या धर्म-अधर्म के साधन को तथा उसके फल को देने वाली है। जिस विद्या से आत्यंतिक कल्याण न हो वह अविद्या है। जिस विद्या से आत्यन्तिक कल्याण हो वही विद्या है। यह जीव जब परमात्मा की शरणागति स्वीकार करके सत्संग करता है। तब अविद्या से तर जाता है।

परमात्मा द्वारा प्राप्त बुद्धि का उपयोग मनुष्य विविधक्षेत्रो में करता है। कितने अर्थ प्राप्ति के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग करते हैं, कितने कामोपभोग में अपनी बुद्धि लगाते हैं। कितने व्यवहार मार्ग में बुद्धि दौड़ाते हैं। कितने लोग राजनीति में, कितने लोग शास्त्र चिन्तन में कितने लोग कविता-श्लोक रचना में अपनी बुद्धि का उपयोग करते हैं। लेकिन इसी बुद्धि को आध्यात्मिक मार्ग में लगाये तो आत्यन्तिक कल्याण होजाय - ऐसी बुद्धि को कुशाग्रबुद्धि कहेंगे। स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में कहा है कि कितने लोग व्यवहार चतुर होते हैं तो भी आत्मकल्याण के लिये प्रयत्न नहीं करते। ऐसे व्यक्ति को कुशाग्र बुद्धिवाला नहीं समझना चाहिये। जो आध्यात्मिक विचार से ओतप्रोत हैं वे ही कुशाग्रबुद्धिवाले कह लायेंगे। जो संसार के व्यवहार में रचेपचे रहते हैं वे मोटी बुद्धिवाले कहे जायेंगे।

स्वामिनारायण भगवान कहते कि नाथ भक्त बुद्धिवालो हैं। तारुपंत दिवान मूर्ख है। नाथ भक्त के पास विपुल सम्पत्ति नही थी। फिर भी भगवान में अपूर्व निष्ठा थी। थोड़ी बुद्धि भी प्रत्यक्ष परमात्मा का निश्चय करने में समर्थ है, उसी को कुशाग्रबुद्धि कहेंगे। नारुवंत बडोदरा के दीवान थे। जिसके नाम से सिक्का का चलन चलता था। उनकी बुद्धि राज्य शान चलाने में कुशल थी फिर भी भगवान में निश्चय न होने से उनकी कुशाग्र बुद्धि नहीं कही जायेगी। भगवान तथा भक्त दोनो का वे द्रोह किये थे। कल्याण के लिये जो प्रयत्न करे उसे ही कुशाग्र बुद्धिवाला कहा जायेगा।

जो कर्म परमात्मा की प्रसन्नता के लिये किया जाय,

जिससे परमात्मा प्रसन्न हो, वहीं सच्चा कर्म है । परमात्मा सम्बन्धी जो ज्ञान या विद्या हो वही सच्ची विद्या कही जायेगी। कुशाग्रता भी उसे ही कहा जायेगा।

भगवान राम के समकालीन महान ज्ञानी रावण था लेकिन उसका ज्ञान तामसी होने से पतन हुआ । जिसका भी पतन होता है उसमें उसकी बुद्धि ही कारण होती है। इसलिये अपनी चतुराई, अपना विवेक, ज्ञान, विज्ञान जब परमात्मा से सम्बन्धित होता हो वही उसे कुशाग्र बुद्धि कह सकते है । शबरी का ज्ञान-विवेक उत्तम था इसलिये उसमें कुशाग्रता कह सकते हैं। इसी तरह स्वामिनारायण भगवान के समकाल में जीवुबा तथा लाडुबा, राजबाई, लाकड़ी बाई लाधीबा, माताजी इत्यादि बहनो ने प्रभु के प्रत्यक्ष पना को समझी थी, इसलिये उन्हें भी कुशाग्रबुद्धि कहा जायेगा । जो शास्त्र को जानने वाले विद्वान है वे ज्ञान जरुर है लेकिन कुशाग्रबुद्धि नहीं है क्योंकि वह ज्ञान भार स्वरुप कहा जायेगा । क्रिया विहीन होने से इसी तरह - निर्विकल्पानंद स्वामी, दयानंद स्वामी, पूर्णानंद स्वामी, शास्त्रज्ञ थे लेकिन अर्थघटन जैसा करना चाहिये न करने से वे अपना मोक्ष विगाड़ लिये। इन्हें भी कुशाग्र बुद्धिवाला नहीं कहा जायेगा।

●

दान की महिमा

- सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा

शास्त्रों में दान की खूब महिमा बताई गयी है। दान को धर्म का आभूषण कहा है। प्रभुने एक हाथ कमाने के लिये दिया है तो दूसरा दान करने के लिये दिया है। दुःख का सहन करना चाहिये लेकिन सुख को दूसरे में बांटना चाहिये। वृक्ष फल-फूल का त्याग करते हैं, इसलिये परमात्मा उन्हें अधिक फूल फल देते हैं। दान पुण्य जहाँ तक हो सके अपने हाथ से करना चाहिये समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। धन परमात्मा का है, हम तो मात्र धन के रक्षक हैं। धन को भगवान के काम में लगाना चाहिये। तनकी शुद्धि स्नान करने से होती है, मन की शुद्धि भगवान के गुणानुवाद से होती है। धनकी शुद्धि दान से होती है । शास्त्रों में लिखा है कि धं-धो अर्थात् धन धोकर व्यवहार में लेना चाहिये। धन को कैसे धोया जायेगा ? श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में लिखा है कि - अपनी जो वृत्ति या उद्यम उसमें से भगवान कृष्ण को दशवां या वींसवां हिस्सा दान करना चाहिये। हिंसा नही करना, यज्ञ करना, द्वादशी इत्यादिक पर्व में ब्राह्मण-संतो को भोजन करना । बड़े सत्संगी भगवान के मंदिर में बड़े बड़े उत्सव करावें। इस तरह दान का परिमार्जन होता रहता है। मंदिर निर्माण में सहयोग करना । यदि साधारण स्थिति हो तो भी अपने कसब की कमाई में से दान करते रहना। जो धनी लोग है उनकी बैंक की डिपोझिट बेंक में ही रह जायेगी । परलोक के मार्ग में वह सहायक नहीं होगी, किया गया दान पुण्य ही सहायक होता है ।

जो लोग आज सुखी हैं वे लोग पूर्वजन्म में दान पुण्य किये होंगे । जो लोग गरीब है या दुःखी है वे दान-पुण्य, परोपकार नहीं किये होंगे। इसलिये इस जन्म में इसका ध्यान रखकर दान-पुण्य, परोपकार करलेना चाहिये। मनुष्य देह बड़ी दुर्लभ है, इसकी चरितार्थता धार्मिकता में है, अन्यत्र खराब मार्ग में लगाने की नहीं है।

एक राजा ने प्रधान से पांच प्रस्न पूछा - (१) है है और है। (२) है है और नहीं। (३) है और नहीं। (४) नहीं और है। (५) नहीं नहीं और नहीं। इसका उत्तर देने के लिए वह शहर में घूमने लगा। एक स्थान पर उसने एक नगर शेठ का बंगला देखा जहाँ पर शेठ एक झूले पर झूलते हुये धर्म शास्त्र वांच रहा था। नौकर पंखा झल रहा था। दरवाजे पर भीख मांगने वालों की साधुओं की, रोगियों की भीड़ लगी हुई थी। शेठ अपने नौकर से अन्न वस्त्र, औषधिदिला रहा था। लेने वाले अन्तरात्मा से शेठ को आशीर्वाद दे रहे थे। यह दृश्य देखकर प्रधान शेठ से कहा आप मेरे साथ आइये। दोनो रथ में बैठकर आगे चले। यहाँ दूसरे शेठ का बंगला दिखाई दिया। वहाँ देखा कि शेठ झूले पर बैठकर नवलकथा बांच रहा था। शेठ के दरवाजे पर भिखारी भीख मांगने के लिये खड़े थे। शेठ नौकरों से भगाने के लिये कह रहा था। इससे निराश होकर शेठ को श्राप देते हुये वापश जा रहे थे। ऐसा दृश्य देखकर उस शेठ को भी साथ में लिलिया । आगे एक वेश्या की हवेली दिखाई दी जहाँ पर लोग वेश्या के हाथ से मदिरापान कर रहे थे। आने वाले उसे रुपयों का हार पहना रहे थे। वेश्या को भी प्रधान ने अपने रथपर बैठा लिया और रथ आगे चला। वहाँ पर धास की एक झोपड़ी दिखाई दी। जिस में एक संत भजन कर रहे थे। फटाकपड़ा पहने हुये थे। प्रधान ने संत से

कहा कि आप हमारे साथ चलिये और वे साथ होलिये । आगे जाते समय एक बिखारी को देखा जो भूख से व्याकुल था । उसे भी अपने साथ लेलिया । राजा के पास आकर प्रधान ने कहा, हे महाराज ! आपके पांचो प्रश्न का उत्तर लेकर आया हूँ । ऐसा कहकर नगरशेठ को आगे करके कहा कि, इस शेठ का पूर्व का पुण्य है जिसके कारण यह धनवान है, जो आज धार्मिक कार्य, पुण्य कार्य कर रहे है, दीन-दुखिया की मदद कर रहे हैं । इससे आगे के जन्म में भी धनवाल ही होंगे । इसका उत्तर है और है । दूसरे प्रश्न का यह शेठजी पूर्व के पुण्य से आज धनवान है, परंतु इनका जीवन धार्मिक नहीं है, दीन-दुखियों में इनकी आस्था नहीं है, दान पुण्य नहीं करते, इस लिये आगे के जन्म में ये भिखारी होंगे । इसका उत्तर - है है और नहीं । तीसरे उत्तर में वेश्या को आगे करके कहते हैं कि आज यह व्यभिचार करके खूब धनवान है, परन्तु मृत्यु के बाद यमयातना का भयंकर दुःख भोगना पड़ेगा इसलिये इसे सुख नहीं मिलेगा । इसका उत्तर - है और नहीं । चौथे प्रश्न में संत को आगे करके कहते हैं कि स्थूल रुप से आज इनके पास सम्पत्ति नहीं है । परंतु सदाचार करते हुये ये नवधा भक्ति करते हैं । इसलिये मृत्यु के बाद परमात्मा के धाम में जायेंगे और वहाँ पर महासुख की प्राप्ति करेंगे - इसका उत्तर - नहीं और है । पांचवे प्रश्न के उत्तर में भिखारी को आगे करते हुये कहते हैं कि यह पूर्वजन्म में मनुष्य था लेकिन परोपकार या दान पुण्य कुछ किया नहीं इसलिये इस जन्म में मनुष्य तो बना उसमें भी भिखारी बना । आगे के जन्म में भी इसे भिखारी ही बनना पड़ेगा । क्योंकि इस जन्म में भी इससे कुछ दान-पुण्य-परोपकार हुआ नहीं है । इसका उत्तर है - नहीं, नहीं और नहीं । यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गया ।

यह दृष्टांत जीवन में उतारने योग्य है । जो लक्ष्मी भागवतकार्य में लगती है उत्तम-प्रकार की है । जो धन एकट्ठा करते हैं और दान पुण्य नहीं करते उनका धन मध्यम प्रकार का है । जो धन केवल पंचविषय के लिये होता है वह कनिष्ठ प्रकार का होता है । गीता में तीन प्रकार का दान बताया गया है । (१) सात्विक दान (२) राजसदान (३) तामसदान । खराब जगहर पर जिसका उपयोग हो वह तामसदान है । सुपात्र में दान की बात कहते हैं देवानंद स्वामी

विवेकी नरने एम विचारीने जोवुं,
कुपात्र ने दान देवुं, ते बीज खारमां बोवुं रे ... विवेकी ।
कामी क्रोधी लोभी लंपट, कूडा बोलका वे,
अन्न धन वस्त्र तेने आपे ते शेकी वावे रे ... विवेकी ।
इन्द्रिय पांच छठुं मन जीते, ते हरिदास कहावे,
वाली वस्तु तेने आपे, अनंत गणी तई आवे रे... विवेकी ।

इसलिये भगवान धन दियें हो तो परोपकार में, पुण्य में, दान-भेंट में, मंदिर में उपयोग करें, अन्यथा इस संसार में मिली सभी वस्तुये यही की यहीं रह जायेंगी कुछ साथ नहीं जायेगा ।

•

सत्संग से नारायण की प्राप्ति होती है

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल)

मानव जीवन मं सत्संग की महिमा अद्‌भुत है । सत्संग करने वाला तथा कराने वाला दोनो का जीवन धन्य हो जाता है ।

एक बार नारदजी हाथ में वीणा लेकर घूमते-घूमते हिमालय में भगवान शिव के पास पहुंच गये । वहाँ उनसे सत्संग की महिमा के विषय में पूछे । भोलेनाथने कहा कि इसका समाधान आपको मृत्यु लोक में ही मिलेगा । नारदजी मृत्युलोक में आते है और कीड़े को प्रश्न पूछते हैं लेकिन प्रश्न पूछते ही वह मरजाता है । पुनः नारदजी महादेव के पास जाते हैं । विगत निवेदित करते हैं । यह सुनकर महादेव पुनः उन्हें मर्त्यलोक में भेंजते है । नारदजी इसबार एक बछड़े से प्रश्न करते, लेकिन प्रश्न सुनते ही वह भी मरजाता है । बड़े आश्चर्य के साथ वे महादेव के पास जाते हैं । पुनः मर्त्यलोक में प्रेषित करते हैं । इसबार एक नूतन जन्मे हुये शिशु से प्रश्न पूछते है । वह शिशु जो अभी पैदा हुआ था, नारदजी की वात सुनकर बड़ा प्रसन्न होता है और कहता है कि नारदजी ! आप हमारे मुक्ति दाता है । वह इसलिये कि पहली बार जब प्रश्न किये तब भी मैं ही था दूसरी बार भी मैं ही था अब तीसरी बार मानव बालक के रुप में मेरा जन्म हुआ । यह आप की सत्संग का फल है । मैं अब मनुष्यरुप प्राप्त करके उत्तम सत्संग करुंगा, स्वयं मुक्त होकर दूसरो को मुक्त करुंगा । यह है सत्संग का प्रभाव । सत्संग में व्यक्ति नारायणरुप हो जाता है । इस सत्संग से सभी को यह ज्ञान होना चाहिये कि वह जब मनुष्य शरीर प्राप्त किया है तो चरितार्थ करलेना चाहिये ।

सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४० वां प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया

भरत खंड के अधिष्ठाता परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा ब्रह्म निष्ठ संतो एवं धर्मकुल प्रेमी हरिभक्तो की उपस्थिति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४० वां प्रागट्योत्सव ता. २४-१०-१२ विजया दशमी के दिन अमदावाद मंदिर के सभाखंड में धूमधाम से मनाया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री जब पधारे उस समय मंदिर के बाहर चौक में संत-हरिभक्तों द्वारा भव्य उत्सव किया गया। संगीतमय वातावरण में पदार्पण के साथ ही आतिशबाजी से गगन गूंज उठा था। श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो द्वारा श्री नरनारायणदेव की आरती उतारी गयी। बाद में सभा मंडप में जाकर बिराजमान हुये। विद्वान पंडितो द्वारा स्वस्तिवाचन के बाद मुख्य यजमान मुंबई भाइंदर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा सहयजमान पिडोरिया परिवार (माधापर-कच्छ) वर्तमान में पर्थ ओस्ट्रेलिया - सुपुत्र कांतिभाई, विजयभाई, सुरेशभाई, दामाद मुकेश खीमजी हालाई इस के साथ क्रिष्णाबहन नवीनभाई तथा प्रतीक परिवारने आरती उतारी थी। बाद में अग्रगण्य सन्त तथा स्कीम कमेटी के सदस्य समूहमें आरती उतारे थे। इस प्रसंग पर पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, स.गु.सा. निर्गुणदासजी, स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, मूली के महंत स्वामी, स.गु. नौतमप्रकाश स्वामी (वडताल), शा. विश्वस्वरुपदासजी तथा स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच) इत्यादि संतोने प.पू. आचार्य महाराजश्री को शुभेच्छा व्यक्त की थी।

इस प्रसंग पर अमदावाद कालुपुर मंदिर से प्रकाशित कीर्तनावली में सेवा करने वाले स.गु.शा. हरिकेशवदासजी तथा प.भ. रमेशभाई आर. मारफतिया (अमेरिका) तथा निष्कुलानंद काव्य तथा भक्त चिंतामणी ग्रन्थ में सेवा करने वाले अ.नि. प.भ. मावजीभाई विसराम खीमाणी, मानबाई, कुमारी सुशीलाबहन, मावित्र प.भ. करशनभाई जीणा जेसाणी, रतनबाई, प.भ. कान्तिलाल मावजी खीमाणी, ध.प. शर्मिला, सुपुत्री नेहा, शैली इत्यादि जनो को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद देकर ग्रन्थ का विमोचन किया था।

इसके अलावां स.गु.स्वा. हरिकेशवदासजी द्वारा लिखित ''सत्संग चिन्तामणी'' पुस्तिका तथा जेतलपुर मंदिर द्वारा प्रकाशित ''श्रीहरिलीलासिन्धु'' श्रीहरि कालीन ब्र. वैष्णवानंद कृत भाग-१ पुस्तक का भी पू. महाराजश्री के वरद् हाथों विमोचन किया गया था।

इस प्रसंग पर अमेरिका आई.एस.एस.ओ. श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की बाल्यावस्था से लेकर वर्तमान समय तक देश-विदेश में की गयी प्रवृत्तियों का सुंदर संकलन करके डोक्युमेन्टरी फिल्म परदा पर दिखाई गयी थी। जिसका दर्शन करके हरिभक्त धन्य हो गये थे।

बाद में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों का मोक्षदायी-कल्याणकारी आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सभा संचालन स्वा. रामकृष्णदासजीने किया था। अनेकों धाम से संत तथा हरिभक्त पधारकर पुष्पहार पहनाकर चरण स्पर्श करके शुभकामना व्यक्त किये थे।

ऐसा सुंदर प्रसंग पू. महंत स्वामी तथा को. पार्षद दिगम्बर भगत के मार्गदर्शन में ब्र. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, विश्वविहारीदासजी इत्यादि संत-पार्षद-अमदावाद, बापुनगर, जीवराजपार्क श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोग से धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसने यह दर्शन का लाभ लिया उसका जीवन धन्य हो गया। पूर्णाहुति के बाद संत-भक्त सभी महाप्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्तित हुये थे। महाप्रसाद के यजमान मावित्र अ.नि. प.भ. मावजीभाई विसराम खीमाणी, ध.प. मानबाई, कुमारी सुशीलाबहन इत्यादि कच्छी हरिभक्त थे।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा. गुरुप्रसाददासजी एवं आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से जलझीलणी एकादशी को श्री गणपति भगवान के विसर्जन के अवसर पर शोभायात्रा कांकरिया तालाब तक गयी जहाँ पर गणेशजी की आरती की गयी थी। वहीं पर शा. यज्ञप्रकाशदासजी तथा संत मंडलने भगवान की महिमा को समझाया था। सभी को फलाहार का प्रसाद दिया गया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा का कार्य किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में ता. १०-९-१२ से ता. १६-९-१२ तक सत्संगिजीवन की कथा प.पू.स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई।

अधिक पुरुषोत्तम मास में ठाकुरजी के सानिध्य में महापूजा करके छप्पन भोग लगाया गया था।

ता. १२-९-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री रात्रि ९-३० बजे पधारकर सभी को दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिये थे। संतोने भी अमृतवाणी का लाभ दिया था।

महंत गुरुप्रसाद स्वामी तथा आनंद स्वामी की प्रेरणा से नरोत्तम भगत, नीरुभाई, मूली के पुजारी मुक्तजीवनदासजीने सुदंर सेवा का कार्य किया था। श्री नरनारायण युवक मंडल श्रीहरि महिला मंडल तथा कष्टभंजन देव पाठ मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। कांकरिया मंदिर के गोर विष्णुभाई शास्त्री तथा गौरांग ने समूह महापूजा करवाई थी।

अधिक मास में थलतेज विस्तार में द्वितीय सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से थलतेज बोडकदेव विस्तार में ता. २-९-१२ रविवार की रात्रि में ८ बजे से ११-३० तक प.पू. लालजी महारजश्री के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मडंल द्वारा धुन, कीर्तन, सत्संग कथा हुई थी। जिस में कालुपुर मंदिर के महन्त स्वामी, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी, स्वामी निर्गुणदासजी, तथा हरिॐप्रकाशदासजी इत्यादि संतो की अमृतवाणी का एवं कीर्तनकार पूरव पटेल के कीर्तन का सभी ने रसास्वाद किया था। सभा के यजमान श्री धनवंतभाई पटेल ने सुंदर लाभ किया था। बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारकर बहनों को दर्शन का लाभ दी थी।

बोडकदेव तथा थलतेज विस्तार के हरिभक्त प्रतिमास के शनिवार को सत्संग सभा करते अन्य हरिभक्त भी इसका लाभ ले सकते है। रात्रि में ८ से १० बजे तक सभा चलती है।

संपर्क - कृष्णकांत शामजीभाई पटेल

सी-१०, साग्रीला मेधराज ९८२५९५६२२०

धनवंत पटेल (थलतेज) - ९८२५०१६४५३

श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय अक्षर महोलवाडी जेतलपुर में सरस्वती पूजन

प.पू. भावि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा स्थापित श्री स्वामिनारायण सं.म.वि. जेतलपुरधाम को २०० वर्ष पूर्ण होने जा रहा है। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी सरस्वती पूजन का कार्यक्रम पाठशाळा के विद्यार्थी तथा प्राध्यापकोने मिलकर ता. २१-१०-१२ से २३-१०-१२ तक किया था। जिसमें विद्यार्थीने वेद परंपरागत संस्कृत भाषा में विविधकार्यक्रम प्रस्तुत किये। सरस्वती पूजन के यजमान परम्परानुसार धर्मकुल परिवार ही था। जिस में प.पू. लालजी महारजाश्री सरस्वती माताजीकी पूजा षोडशोपचार वैदिक मंत्रो से किये थे। साथ में श्री घनश्यामभाई कान्तिलाल शाह परिवार भी पूजन का लाभ लिया था। विशेषरुप से प.पू. लालजी महाराजश्री पूजन के बाद सभा में अध्यक्ष स्थान पर विराजमान होकर विद्यालयीय कार्यक्रम को देख रहे थे। इस कार्यक्रम में संस्कृत महाविद्यालय के संचालक शा.प.पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदाजी इत्यादि संत पधारे हुये थे। अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्रीने २०० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर विद्यालयकी द्विशताब्दी अच्छे ढंग से मनाई जाय ऐसी उद्धोषणा की थी। इस विद्यालय में अधिक से अधिक संत तथा ब्राह्मण बालक विद्या का लाभ लें और विद्यालय की खूब प्रगति हो ऐसा आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन प्रा. श्री वासुदेव पुरोहितने किया था।

अन्य सभी व्यवस्था महंत के.पी. स्वामी तथा प्रिन्सीपाल डॉ. श्री वाचस्पति मिश्राजी (बड़े गुरुजी) एवं विद्यार्थी प्राकशकुमार जोशी (शा.-३) ने किया था। अन्य सभी विद्यार्थियों की सेवा प्रेरणारुप थी। भक्तजन प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे।

इस पाठशाला में कक्षा ९ से आचार्य (एम.ए.) तक श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सीटी, वेरावल द्वारा संलग्न इस संस्था में ब्राह्मण विद्यार्थी तथा संत अभ्यास करते है। निष्पक्ष-भेदभाव के विना वडताल देश तथा अमदावाद के संत-पार्षदों की नि:शुल्क पठन पाठन की व्यवस्था की गयी है। (शा. भक्तिनन्दनदासजी तथा प्रकाश जोषी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा के ३१ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में सम्पन्न सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट मंदिर के दोनो मंहत स्वामियों की प्रेरणा से गवाडा मंदिर का ३१ वां पाटोत्सव ता. २६-९-१२ को हिम्मतनगर में सम्पन्न हुई। जिसमें शा.पी.पी. स्वामी, शा.विश्वस्वरुप स्वामी, शा. हरिजीवन स्वामीने कथा का लाभ दिया था। १९ वीं सभा ता. २१-९-१२ को समौ गाँव में हुई थी। जिसमें पी.पी. स्वामी, राम स्वामी, चेतन स्वामीने कथा का लाभ दिया था। २० वीं सभा ता. २३-९-१२ को लोदरा गाँव में हुई थी। जिस में शा.पी.पी. स्वामी, राम स्वामी, अभय स्वामीने सुन्दर कथा करके सभी को आनंदित किया था। (शा. चैतन्यस्वपुदासजी)

श्री स्वामिनारायण जयपुर (राज.) पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के प.पू.स.गु. शा.स्वामी पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) तथा यहां के महंत स्वामी देवस्वरुपदासजी की प्रेरणा से श्रीमोहनलाल ठाकोरलाल के यजमान पद पर पाटोत्सव सम्पन्न हुआ था। जिस में ठाकुरजी का अभिषेक,

पंडितो द्वारा महापूजा, अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम धूमधाम से मनाये गये थे। प्रासंगिक सभा में पू.शा. आत्मप्रकाशदासजी, शा. हरिप्रकाशदासजी इत्यादि संतोने हरिभक्तों को आशीर्वाद देकर प्रसन्न किया था। (कृष्ण भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा कथापारायण तथा जलझीलणी एकादशी एवं महामंत्र धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी के मार्गदर्शन में ता. ३-९-१२ से ता. ९-९-१२ तक श्री अंबालाल मगनदास पटेल के यजमान पद पर तथा स.गु.शा. हरिॐप्रकाशदासजीके वक्ता पद पर श्रीमद् भागवत कथा सम्पन्न हुई। जिस में कथा के भीतर आने वाले सभी उत्सव मनाये गये थे। बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। कथा की पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। सभी को हार्दिक आशीर्वाद देकर कृतार्थ किये थे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २६-९-१२ को जलझीलणी एकादशी को शोभायात्रा निकाली गयी थी। दोपहर में १-३० बजे नाराणपुरा से नारायणघाट के लिये प्रस्थान की थी। जिस में रासमंडली, बैन्डपार्टी, शहनाई बादक, इत्यादि सभी श्रृंगार किये हुए ट्रैक्टर-ट्रक इत्यादि साधन पर गीतवाद्यादि करते हुये निकले, इसके साथ करीब ३०० साफाधारी बाइक पर सवार होकर साथ चले इसके अलांवा ५० अन्यगाड़ियां थीं। अनेकों धामों में से बड़ी संख्या में संत भी पधारे हुये थे। जब लालजी महाराजश्री पधारे उस समय सभी के आनंद की सीमा न रही। ४-०० बजे के आसपास नारयणघाट शोभायात्रा पहुंची थी। इस शोभायात्रा में बड़ी संख्या में बहने भी भाग ली थी। नारायणघाट पर कालूपुर मंदिर के तथा नारणपुरा मंदिर के गणपतिजी का पूजन किया गया। बाद में नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी तथा नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामीने भगवान गणपतिजी को नदी में स्नान कराये। पू.. लालजी महाराजश्री के साथ नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी नारणपुरा के महंत स्वामी तथा ग्राम्यविस्तार से आये हुये सभी इस कार्यक्रम में साथ थे। ठाकुरजी के विश्राम की व्यवस्था अ.नि. भगवानदास शिवदास पटेल के घर पर की गयी थी। रात्रि में ९ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सांनिध्य में श्री हसमुख पाटडिया तथा हास्य कलाकार धनसुख टांक का सुंदर कार्यक्रम रखा गया था। प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी भी पधारकर यजमान परिवार की बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। दोनो भाईयों के घर पर महापूजा विधिहरिॐ स्वामीने कराई थी। प.पू. बड़े महाराजश्रीने आरती उतारी थी। इस प्रसंग पर अनेकों स्थानों से संत पधारे हुये थे। हरिभक्तों की विशाल सभा में प.पू. आचार्य महाराजने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। यजमान परिवारने इस कार्यक्रम का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था।

श्राद्धपक्ष में महापूजा महामंत्र धून

ता. १०-१०-१२ को श्रीहरि के अन्तर्ध्यान की तिथी के अवसर पर श्री नरेशभाई भावसार तथा श्री हितेशभाई सोनी के यजमान पद पर सुंदर महापूजा महंत स्वामी तथा पाठशाला के विद्यार्थियोंने कराई थी। महापूजा के अन्त में धुन की गयी थी। (पटेल घनश्यामभाई, उवारसद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से हरिद्वार के मंदिर में पुरुषोत्तम मास के समय कथा का आयोजन किया गया था। जिस में प्रथम पारायण बचूभाई की तरफ से द्वितीय पारायण सिद्धपुर के हरिभक्तों के यजमान पद पर, तृतीय पारायण नारायणपुरा के हरिभक्त रणछोड़भाई तथा चन्द्रकान्तभाई पटेल की तरफ से हुई थी। चौथी पारायण अंबाभाई धडुक, वाडज की रेखा बहन तथा गौरांगभाई की तरफ से हुई थी।

(को. हरिप्रकाश)

श्री प्रभा हनुमानजी जमीयतपुरा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ७-१०-१२ प.पू. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की पुण्यतिथि के अवसर पर शा. घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्तापद पर एक सभा आयोजित हुई। इस प्रसंग पर नारणपुरा मंदिर के महंत स्वा. हरिॐप्रकाशदासजीने कथा का लाभ दिया था। इस अवसर पर पू. श्याम स्वामी, चैतन्य स्वामी, पधारे हुए थे। इन्होंने धर्मकुल तथा हनुमानजी के माहात्म्य को समझाया था।

कथा के अन्त में सभी प्रसाद ग्रहण करके स्वस्थान प्रस्थान किये। सभा संचालन शा. घनश्याम स्वामीने किया था। (महंत विजयप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में गवैया स्वामी के शिष्य हरिजीवन स्वामी तथा बलदेव स्वामी ने नूतन मंदिर आदिश्वरनगर में पुरुषोत्तम मास के समय ता. ८-९-१२ के श्री स्वामिनारायण महामंत्र का आयोजन किया था। इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर भगवान की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुये थे। इस प्रसंग पर जेतलपुर से प.पू. पी.पी. स्वामी, घनश्याम स्वामी (माणसा), जगतप्रकाशदासजी (कालुपुर), हरिप्रकाश स्वामी (मकनसर), माधवप्रसाद स्वामी (प्रांतिज) पधारकर प्रेरणात्मक प्रवचन किये थे। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। २५-९-

१२ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी सां.यो. बहनो के साथ पधारी थी। (को. भीखुभाई डाभी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल - पंचम ज्ञान सत्र

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बोपल मंदिर में १०-९-१२ से १६-९-१२ तक पंचम ज्ञान सत्र का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर भागवत दशम स्कंधकथा का आयोजन भी था - जिस के यजमान श्री हिंमतभाई थे । शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने कथा का पारायण किया था। समग्र आयोजन स्वामी की प्रेरणा से को. अमृतभाई पटेल तथा अरविंदभाई मनाये थे।

इस प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारकर अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। मंदिर के महंत स्वामीने सभा संचालन किया था। अन्त में सभी प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे।

(प्रवीणभाई उपाध्याय)

पाटडी श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा घर-घर ठाकुरजी का पदार्पण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के पुजारी सां. शांताबा की प्रेरणा से श्राध्धपक्ष में ठाकुरजी को घर-घर पदार्पण करवाया गया था। रात्रि में धुनकीर्तन किया गया था । इस प्रसंग पर जेतलपुर से भक्तिनन्दन स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामी, विद्यार्थी आनन्द स्वामी (जेतलपुर वाडी)ने कथा का लाभ दिया था। रात्रि में वचनामृत की कथा की गयी थी। श्री नरनारायणदेव की निष्ठा बढे तथा धर्मकुल में निष्ठा बढे उस तरह का प्रयास किया गया। भोजनादिक की व्यवस्था की गयी थी। (को. नारणभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अधिक मास में बापुपुरा गाँव में विदुरनीति पारायण माणसा के महंत स्वामी ने किया था। जिस के यजमान चौधरी रमणभाई थे। कथा का आयोजन महादेव मंदिर में किया गया था। इस प्रसंग पर को. रमणभाई, पोपटभाई, जेसंग स्वामी, लालभाई तथा पंडित श्री सेवा की प्रेरणा रुप थी। हरिभक्त कथा का रसपान करके धन्य हो गये थे।

(गवैया चन्द्रप्रकाश)

दियोदर (बनासकांठा) में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १८-१०-१२ को श्री दिलीपभाई के घर पर सुन्दर कथा का आयोजन किया गया था। जिस में सिद्धेश्वर स्वामी तथा माधवप्रियदासजीने सुन्दर कथा सुनाकर सभी को आनंदित किया था। (दियोदर सत्संग सभा)

मारुसणा में सत्संग सभा

भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मारुसणा गाँव में उमिया माता चौक में एक सभा आयोजित हुई थी। जिस में शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, शा. माधवप्रियदासजीने कथा श्रवण करवाया था। गाँव के सभी भक्तजन इस कथा का लाभ लेकर धन्य हो गये। (जीवणभाई पटेल)

चाणस्मा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १६-१०-१२ को चाणस्मा गाँव में सुंदर सत्संग सभा हुई। जिस में शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, शा. माधवप्रियादसजीने श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया था । धर्मकुल की आज्ञा में रहने की वात दोनो संतोने की। (बाबुभाई कोठारी)

डीसा में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से डीसा गाँव में शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी तथा शा. माधवप्रियदासजीने सुन्दर कथा के माध्यम से भगवान का माहात्म्य तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था। (गुणवंतभाई)

अमदावाद श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १४-१०-१२ को श्रीनरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल के बालको ने यात्रा प्रवास निकाली थी। जिस में हिंमतनगर, सापावाडा, टोरडा तथा प्रांतीज मंदिर में ठाकुरजी का दर्शन करके मंदिर के महंत स्वामी के साथ बैठकर देव-आचार्य का महत्व समझे थे। बालक भी इस ज्ञानगोष्ठी से काफी प्रभावित हुये थे।

इस आयोजन को श्री रतिभाई पटेलने किया था। साथ में बापूनगर के राकेश भगत भी थे। (गोपालभाई मोदी)

उणाद (ता. वडगनर) सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २५-१०-१२ को दंढाव्य देश के उणाद गाँव में ता. वडनगर में दिव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था।

वक्ता के रुप श्री उदयनजी महाराजा (विसनगर) ने वचनामृत के सिद्धान्तो को तथा धर्मकुल के महत्व पर सुंदर कथा की, जिसका लाभ पूरे गाँव के भक्तोंने लिया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, विसनगर द्वारा कीर्तन भजन किया गया था। (तुलसी पटेल, उणाद)

लुणवा (ता. खेरालु) सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १३-१०-१२ को दंढाव्यदेश के लुणवा गांव में (ता. खेरालु) दिव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था।

वक्ता के रुप में श्री उदयनजी महाराज (विसनगर) ने वचनामृत के सिद्धान्तो पर तथा धर्मकुल के महत्व पर सुंदर कथा की, जिसका लाभ पूरे गाँव के भक्तोंने लिया। श्री

नरनारायणदेव युवक मंडल, विसनगर द्वारा कीर्तन भजन किया गया था। (तुलसी पटेल, उणाद)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली मंदिर सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से मूली मंदिर में भाद्रपद शुक्ल-१५ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । इसके आयोजक महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी थे । सत्संग सभा के वक्ता शा.स्वा. रामकृष्णदासजी थे । इस प्रसंग पर शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (वांकानेर), स्वामी भक्तिहरिदासजी, महंत स्वा. नारायणघाट इत्यादि संत पधारे हुये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सन्निकट भविष्य में मूली देश के छोटे-छोटे बालको में सत्संग का संस्कार सिंचन हो इसके लिये प.पू. लालजी महाराजकी अध्यक्षता में एक बाल सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया था । समस्त प्रसंग का संचालन को.स्वा. कृष्णवल्लभदासजीने किया था । बड़ी संख्या में झालावाड प्रदेश के हरिभक्त लाभ लिये थे ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

रणजीतगढ देरियारी तालाब (ता. हडवद)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. भक्तिविहारीदासजी की प्रेरणा से सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने नीलकंठवर्णी स्वरुप में शिंगडीयो बछनाग नाम की जहरीली वनस्पति का पत्र खाकर जिस तालाब में स्नान करके शिवालय में रात्रि निवास किये थे वह भूमि तीर्थरुप हो गयी थी । जहाँ पर प्रतिवर्ष भाद्रकृष्ण को उत्सव मनाया जाता है । जो परम्परानुसार इस वर्ष की सोमवती अमावस्या ता. १५-१०-१२ को भव्य उत्सव मनाया गया था । जिस में श्री नीलकंठवर्णी की मूर्ति की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी, इस शोभायात्रा में धामो से विद्वान संत पधारे हुये थे । सभीने श्री धाराकृष्णदेव के दृढ आश्रय की बात की थी और धर्मकुल की महिमा को समझाये थे । प्रसादी की छत्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारी गयी । बाद में आतीशबाजी के साथ उत्सव को भव्यरुप से मनाया गया था । जिस में बड़ी संख्या में भक्तजन लाभ लेने के लिये उपस्थित थे । (अनिलभाई बी. दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से अधिक मास में श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा का पारायण एवं समूह महापूजा की गयी थी । वंदनप्रसाददासजीने कथामृत का पान कराया था । (कोठारी स्वामी)

विदेश सत्संग समाचार

अमेरिका की धरती पर श्री स्वामिनारायण मंदिर सीनेमीन्शन (जेतलपुरधाम) का पांचवां वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा वडनगर मंदिर के महंत स्वामी नारायणवल्लभदासजी एवं सीनेमीन्शन मंदिर के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजीके मार्गदर्शन में स्वामिनारायण मदिर के प्रेसीडेन्ट श्री राजेशभाई वी. पटेल (वडुवाला) तथा स्थानिक सदस्यों के सहयोग से अमेरिका के श्री स्वामिनारायण मदिर सीनेमीन्शन का पांचवाँ वार्षिक पाटोत्सव २७-८-१२ से २-९-१२ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों धूमधाम से मनाया गया ।

इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता नारायणवल्लभदासजी थे । इस प्रसंग पर धूमधाम से पोथीयात्रा निकाली गयी थी । प्रथम दिन प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर बहनों को दर्शन-आशीर्वदा का सुख प्रदान की थी । इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. २८-८-१२ को सायंकाल ६-३० बजे पधारे थे । इस समय उनका दिव्य स्वागत किया गया था ।

२९-८-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत हरिभक्तों के साथ हरिभक्तों के घर पर पधरामणी किये थे । ३० अगस्त को श्रीहरियाग के अवसर पर प्रातः ९-०० बजे पू. महाराजश्रीने यज्ञ को प्रारंभ करवाया था । इस प्रसं गपर २१ कुंडी यज्ञ का भी आयोजन किया गया था ।

इस शुभ अवसर पर ता. १-९-१२ को प.पू. आचार्य महाराजश्री शोभायात्रा में पधारे तब नाना विधवाद्ययंत्रो से स्वागत किया गया था । इस शोभायात्रा में सीनेमीन्शन, एडीशन, वीहोकन, ह्युस्टन, डेट्रोईट, शीकागो, फ्लोरीडा, कलिवलेन्ड इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे । शोभायात्रा की पूर्णता के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री मंदिर में पधारकर यज्ञ की पूर्णाहुति किये थे । रात्रि में ८-३० से १२-३० तक ''गुंदालीगाँव के हरिभक्तों द्वारा नाटक किया गया था । जिसे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संत-हरिभक्तों देखकर आनंदित हुये थे । इसके साथ अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये थे ।

ता. २-९-१२ को प्रातः ८-०० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर में प्रतिष्ठित सभी देवों का वैदिक मंत्रो के साथ षोडशोपचार पूजन अर्चन-अभिषेकादि कार्य किया गया था । बाद में पू. महाराजश्रीने श्री घनश्याम महाराजकी तुला विधिकी थी । सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने वक्ता का पूजन करके कथा का पूर्णाहुति की थी । बाद में प.पू.

आचार्य महाराजश्री की पूजन अर्चन किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभा में नारायणवल्लभ स्वामी, विवेकप्रसाद स्वामी व्रजवल्लभ स्वामी इत्यादि संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया था।

अन्त में पू. महाराजश्रीने सर्वोपरि उपासना की वात पर बल दिया था । अंत में मंदिर के प्रेसीडेन्ट श्री राजेशभाईने आभार व्यक्त किया था । सभा संचालन विश्वप्रकादासजीने किया था । अभिषेकप्रसाददासजी द्वारा संकलित ''श्री वर्णिराज चरित्र'' पुस्तक का विमोचन किया गया था । अन्त में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन के साथ सभा का विसर्जन हुआ था । (शा. विश्वप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वोशिंग्टन डी.सी. (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में प्रति शनिवार को सत्संग सभा आयोजित होती है । १९ ता. को गणेश चतुर्थी को श्री गणपति पूजन का सामूहिक आयोजन किया गया था । ता. २६-९-१२ को जलझीलड़ी एकादशी को सामूहिक भजन कीर्तन का भी आयोजन किया गया था । प्रत्येक सभा में नये-नये हरिभक्त भाग लेते हैं । नंद-संतो द्वारा रचित कीर्तन का गायन होता है । वचनामृत पठन-धुन, आरती चेष्टा के पद भी गाये जाते हैं । प्रसाद लेकर हरिस्मरण के साथ सभी विदा होते हैं ।

(कनुभाई पटेल)

कोलोनिया में प.पू. बड़े महाराजश्री

यहाँ के कोलोनिया मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री एकादशी के दिन हरिभक्तों को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये पधारे थे । साथ में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, जेतलपुरधाम के महंत स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी, छपैयाधाम के महंत स्वामी, पार्षद कनु भगत पधारे थे । एकादशी पर्व होने से मंदिर कीर्तन भक्ति से खिल उठा था । सर्व प्रथम हरिभक्तों द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था ।

प्रासंगिक सभा में कालूपुर मंदिर के महंत स्वामी, आत्मप्रकाश स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी ने देव-आचार्य में निष्ठा रखने की वात की थी । प.पू. बड़े महाराजश्री अपने आशीर्वाद में बताया कि - हम सभी मंदिर के माध्यम से जुड़े हुये है । महाराजने स्वयं श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया था । आज विदेश की धरती पर मंदिरों का निर्माण हो रहा है तो, इस मंदिर के माध्यम से सभी में एक सूत्रता बनेगी । आप सभी लोग आपस में सहयोग की भावना रखियेगा । यहाँ का पांचवाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से धूमधाम के साथ मनाया गया था ।

कोलोनिया मंदिर में भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में २८ से ३० सितम्बर तक भागवत दशम स्कन्धकी कथा हुई थी । मंदिर के महंत स्वामी धर्मकिसोरदासजीने हिन्दी में कथा की थी । इस कथा का श्रवण करने के लिये प.पू. बड़ी गादीवालाजी तथा बिन्दुराजा भी पधारी थी । कोलोनिया मंदिर के महंत स्वामी तथा अन्य संत हरिभक्त समूह में मिलकर कथा में आने वाले सभी प्रसंग धूमधाम से मनाये थे । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरन्टो, केनेडा में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी का पदार्पण

एक मुमुक्षु बहन की धर्मकुल के प्रति जो भावना दिव्यता-अनुभव वह सभी उन्हीं के शब्दों में वर्णन करते हुए आनंद का अनुभव हो रहा है ।

मेरे माता-पिता के घर पर भगवान स्वामिनारायण की उपासना भक्ति नहीं थी । फिर भी मेरा विवाह जिस परिवार में हुआ वह स्वामिनारायण का सत्संगी था ।

मेरे पति धर्मकुल तथा स्वामिनारायण भगवान में अपार निष्ठा रखते हैं । उनका पक्ष-निश्चय संतो के प्रति प्रेम अपार है । उनकी भावना देखर मन मे प्रश्न उठता लेकिन समाधान का अवसर नहीं आया । संयोग वश पूर्व के पुण्य प्रताप से पू. गादीवालाजी का दिव्य दर्शन हुआ और उनकी अमतृवाणी का लाभ मिला । धीरे-धीरे सत्संग के समय ही मेर सभी प्रस्त्रोा का समाधान हो गया । एक दिव्य अनुभूति भी हुई । भगवान स्वामिनारायण की गद्दी पर विराजमान धर्मवंशी परिवार दिव्य एवं सत्य है । भगवानके प्रति मेरी निष्ठा दृढ हो गयी है । अब हमें भक्ति करने का एक विशेष आनंद आता है ।

यह प्रसंग प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवाला के टोरोन्टो केनेडा इत्यादि स्थलों पर पदार्पण के समय था । केनेडा का सत्संग समुदाय के प्रेम भरे आममंत्रण पर प.पू. बड़ी गादीवालाजी सां.यो. मंजूबा तथा अन्य बहनों के साथ ता. २३,२४,२५ सितम्बर को टोरोन्टो पधारी थी ।

बड़ी गादीवालाजी के आगमन पर मंदिर में बहनो ने दिव्य स्वागत की तैयारी की थी । रविवार सायंकाल ३-३० से ७-०० बजे तक सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया था । प्रथम मंदिर में मनमोहनक घनश्याम महाराजकी मूर्ति का दर्शन करके श्री गणपतिजी की आरती उतारी थी । बाद में सभी बहनोने पू. गादीवालाजी का नाना विधस्वागत किया था । स्त्रियोंने बड़े अटपटे प्रश्न पू. गादीवालाजी से पूछा था लेकिन सहजभाव से सभी के उत्तर देकर संतुष्ट की थीं । पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक व्यवस्थाओं को सुचारु ढंग से समझाया था ।

२४ सितम्बर को सायंकाल ४-३० बजे से ६-३० बजे तक सभा में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया था । प्रारंभ में पू. बड़ी गादीवालाजी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में सरप्राईज भेंट की गयी । छोटी वालिकाओं द्वारा केक की व्यवस्था की गयी थई । अन्तःकरण से सभी ने प्रागट्य दिन की शुभकामना व्यक्त की थी । आज के दिन सभी के मुख पर आनंद ही दिखाई दे रहा था । इस अवसर पर छोटी बालिकाओ द्वारा नंद संतो के गीत गाये गये । प.पू. गादीवाला प्रसन्न होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी ।

कीर्तन संध्या कार्यक्रम में रास-गर्बा तथा अन्य कीर्तन इत्यादि का भी कार्यक्रम रखा गया था ।

अंत में अपने आशीर्वाद में प.पू. गादीवालाजीने सभी को मंदिर में भगवान के दर्शन के लिये आने पर बल दिया था । प.पू. गादीवालाजीकी वाणी सुनगर सभी बहनों ने वचन दिया कि हम सत्संग प्रवृत्ति के साथ मंदिर मेंस्थायी रुप से आती रहेगी ।

प.पू.श्री बड़ी गादीवालाजी की अमृत वाणी आज भी वहाँ के बहने स्मरण करके अपनी जीवन की दिव्यता का अनुभव करती रहती है तथा धन्यता का अनुभव करती रहती है। (भैरवी पटेल)

पियोरिया चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के आई.एस.एस.ओ. पियोरिया चेप्टर में प्रति रविवार को सायंकाल ६-०० बजे से ८-०० बजे तक सत्संग सभा होती है।

गणेश चतुर्थी के अवसर पर श्री गणपतिजी का पूजन अर्चन करके आरती उतारी गयी थी ।

जलझीलणी एकादशी को भगवान को नौका विहार कराकर जलस्नान कराकर भगवान की प्रसन्नता प्राप्त की गयी थी । बड़ी संख्या में हरिभक्त इस कार्यक्रम में भाग लिये थे । वचनामृत में हरि भक्त इस कार्यक्रम में भाग लिये ते । वचनामृत का पठन भी किया गया था । नई पीढी को प्रोत्साहित करने वाले नये-नये कार्यक्रम किये गये थे । जेतलपुर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी जब शिकागो पधारे वे भी यहाँ का सत्संग देखकर प्रसन्न होकर सभी को आशीर्वाद दिये थे। (रमेश पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ह्युस्टन मंदिर में उत्सव मनाया गया था । महंत के.पी. स्वामी तथा डी.के. स्वामीने सुंदर लाभ दिया था ।

जलझीलणी एकादशी को भगवान की शोभायात्रा निकाली गयी थी । नौका विहार करवाया गया था । बाद में भगवान को गाजेबाजे के साथ मंदिर वापस लाया गया था । इस तरह यहाँ पर सभी प्रसंग बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है । सितम्बर में बालकों का सत्संग शिबिर का भी कार्यक्रम हुआ था। (रमेश पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर क्रोली पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में ता. २६-८-१२ को पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर पुराणी स्वा. विश्वविहारीदासजी के वक्तापद पर भक्त चिंतामणी ग्रन्थ की त्रिदिनात्मक कथा हुई थी । पाटोत्सव के यजमान श्रीहरिशभाई थे । योगी स्वामी तथा पुजारी राजू महाराजने ठाकुरजी का अभिषेक करके दर्शन का लाभ दिया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर ब्राईटन पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ३१-८-११ से ता. २-९-१२ तक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धकी कथा स्वामी विश्वविहारीदासजीने की थी । हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्वीडन पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में ठाकुजी का पाटोत्सव तथा कथा का लाभ पुराणी स्वा. विश्वविहारीदासजीने तथा योगी स्वामीने दिया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ठाकुरजी के पाटोत्सव के निमित्त श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण ता. ६-९-१२ से ता. १२-९-१२ तक पुराणी स्वा. विश्वविहारीदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई थी । जिस के यजमान रजनीभाई गोविंदभाई पटेल, माधुभाई गोविंदभाई पटेल थे ।

जन्माष्टमी को अभिषेक तथा अन्नकूट का उत्सव मनाया गया था । ता. २७-८-२ को समूह महापूजा प.भ. सूर्यकान्तभाई के यजमान पद पर हुई थी । इस प्रसंग पर लंडन से प.भ. मनजीभाई, देवराजभाई, शिवजीभाई पधारे हुए थे । महापूजा का लाभ लिये थे । प.भ. अशोकभाई मांडवी (कच्छ) वाले विशेष प्रेरणा रुप थे ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।